ओ३म्

सुधारक

गुरुकुल झज्जर का लोकप्रिय मासिक पत्र

वर्ष 65 अंक 11 जुलाई 2018 आषाढ़ 2075 वार्षिक मूल्य 150 रु०

झज्जर के एस.पी. श्री पंकज नैन गुरुकुल में पधारे।

झज्जर के एस.पी. श्री पंकज नैन द्वारा ध्वजारोहण।

शिविर का परिचय कराते हुए स्वामी देवव्रत जी।

एस.पी. महोदय का परिचय कराते हुए श्री राजवीर छिकारा

संस्थापक : स्व० स्वामी ओ३मानन्द सरस्वती

सम्पादक : विरजानन्द दैवकरणि

व्यवस्थापक : ब्र० अरुण आर्य

शिविर की चित्रावली

गुरुकुल का परिचय कराते हुए
आचार्य विजयपाल योगार्थी

एस.पी. पंकज नैन उद्‌बोधन देते हुए

एस.पी. पंकज नैन शिविरार्थियों के साथ

शिविरार्थियों को भजन द्वारा प्रेरित करते हुए
राजवीर सिंह छिकारा

झज्जर की उपायुक्त श्रीमती सोनल गोयल
का स्वागत करते हुए चौ० पूर्णसिंह देशवाल

झज्जर की उपायुक्त श्रीमती सोनल गोयल का
स्वागत करते हुए श्री राजवीरसिंह छिकारा

झज्जर की उपायुक्त श्रीमती सोनल गोयल
का स्वागत करते हुए डॉ० राजकुमार आचार्य

झज्जर की उपायुक्त श्रीमती सोनल गोयल
का स्वागत करते हुए विरजानन्द दैवकरणि

सुधारक के नियम व सविनय निवेदन

1. सुधारक का वार्षिक शुल्क 150 रुपये है तथा आजीवन सदस्यता शुल्क 1500 रुपये है।
2. यदि सुधारक 20 तारीख तक नहीं पहुंचता है तो आप व्यवस्थापक सुधारक के नाम से पत्र डालें। पत्र मिलते ही सुधारक पुनः भेज दिया जाएगा।
3. वार्षिक शुल्क तथा आजीवन शुल्क मनीआर्डर द्वारा **'व्यवस्थापक सुधारक'** के नाम भेजें। सुधारक वी.पी. रजिस्ट्री द्वारा नहीं भेजा जाएगा।
4. लेख सम्पादक सुधारक के नाम भेजें, लेख छोटे, सरल, संक्षिप्त, सारगर्भित तथा मौलिक होने चाहिएं तथा स्पष्ट, शुद्ध एवं सुन्दर लेख में कागज के एक ओर लिखे जाने चाहिएं। अशुद्ध एवं गन्दे लेखवाला लेख नहीं छापा जाएगा। लेखों को प्रकाशित करना न करना तथा उनमें संशोधन सम्पादक के अधीन होगा। अस्वीकृत लेख डाक-व्यय प्राप्त होने पर ही वापिस भेजे जाएंगे।
5. सुधारक में विज्ञापन भी दिए जाते हैं, परन्तु विज्ञापन शुद्ध एवं वास्तविक वस्तु का ही दिया जाएगा।
6. यह सुधारक मासिक पत्र समाजसुधार की दृष्टि से निकाला जाता है। इसमें आपको धर्म, यज्ञकर्म, समाजसुधार, देश व समाज की स्थिति, ब्रह्मचर्य, योगासन आदि विषयों पर लेख पढ़ने को मिलेंगे।
7. सुधारक के दस ग्राहक बनानेवाले सज्जन को एक वर्ष तक निःशुल्क सुधारक भेजा जाएगा तथा पचास ग्राहक बनानेवाले सज्जन को दो वर्ष निःशुल्क सुधारक भेजा जाएगा तथा उसका फोटो सहित जीवन परिचय सुधारक में निकाला जाएगा।

–व्यवस्थापक

वर्ष : 65 अंक 11
जुलाई 2018 विक्रमाब्द 2075
दयानन्दाब्द 195 कलिसंवत् 5118
सृष्टिसंवत्- 1,96,08,53,118

विषय-सूची

क्र.सं.	विषय	पृष्ठ
1.	सम्पादकीय	3
2.	किसान, गोभक्तजन आगे...	5
3.	नशा नाश की निशानी...	6
4.	पशुओं के घरेलू उपचार हेतु...	9
5.	गोरक्षा आन्दोलन की स्मृति में	12
6.	गुरुकुल झज्जर में सार्वदेशिक...	14
7.	बन्दा वैरागी का बलिदान	15
8.	श्रावणी पर्व का निमन्त्रण	18
9.	सत्यार्थप्रकाश...	19

सुधारक मासिक पत्र का वार्षिक शुल्क १५० रुपये भेजकर स्वयं ग्राहक बनें और दूसरे साथियों को भी ग्राहक बनाकर सुधार कार्य में सहयोग दीजिये।

-व्यवस्थापक सुधारक

वैदिक विनय

3. आषाढ़

उत यो द्यामतिसर्पात् परस्तात्, न स मुच्यातै वरुणस्य राज्ञः।
दिवःस्पशःप्रचरन्तीदमस्य, सहस्राक्षा अति पश्यन्ति भूमिम्।।

अथर्व० 4.16.4।।

विनय

एक राष्ट्र (रियासत) के राजद्रोह का अपराधी भी उसके दंड से किसी दूसरे राष्ट्र में भाग जाकर बच सकता है। परन्तु इस संसार के परिपूर्ण राजा-पापनिवारक सच्चे राजा-वरुण का अपराध करके, इस संसार के अटल नियमों का भंग करके अर्थात् झूठ, द्रोह, हिंसा आदि करके, यदि कोई चाहे कि हम कहीं भाग जाकर इनके प्राप्तव्य प्रतिफलों से बच जायँ तो यह असम्भव है। वरुण राजा के राज्य के बाहिर मनुष्य कभी भी नहीं जा सकता। इस विस्तृत, दुर्गम, विशाल भूतल के कभी भी नहीं जा सकता। इस विस्तृत, दुर्गम, विशाल भूतल के किसी भी प्रदेश में ही नहीं, किन्तु वह हो सके तो चाहै मंगल, शुक्र आदि किसी अन्य लोक में भी चला जावे और यदि सम्भव हो तो चाहे वह इस सौर-मण्डल (दिवः) से भी परे कहीं जा पहुंचे, तो भी वह वरुण राजा के राज्य के पार नहीं जा सकता। वह चाहे कहीं चला जाय, अपना प्राप्तव्य दंड उसे जरूर भोगना पड़ेगा, अपने किये हुवे कर्म के बन्धन से वह कहीं भी जाकर नहीं छूट सकता। ये दुनियावी राजाओं (राजा कहलाने वालों) के गुप्तचर तो हमारे जैसे अज्ञानी मनुष्य ही होते हैं, उन्हें बहुत धोखे दिये जा सकते हैं, और वे असंख्य भ्रमों के भाजन होते हैं। परन्तु उस वरुण राजा के दिव्य गुप्तचरों से मनुष्य कभी बच नहीं सकता। वे सबकुछ जान लेने में समर्थ होते हैं। वे इस ब्रह्माण्ड भर में सर्वत्र व्यापक हुवे हुवे हैं। वे उस स्वयंप्रकाश वरुणदेवरूपी सूर्य की अनन्त किरणें बनकर सब ब्रह्माण्ड में फैले हुवे हैं। वे उसकी ज्ञानशक्तियों के रूप में हैं। अतः हम मनुष्य जब किन्हीं ईश्वरीय नियमों का उल्लंघन करते हैं (शरीर से, वाणी या मन के मनन से भी मन में कोई भी अनिष्ट आचरण करते हैं) तो उसी क्षण, उसी स्थान पर ये दिव्य वरुण-दूत हमें जान लेते हैं, बल्कि हमें अपने अदृश्य पाशों से तत्काल बांध भी लेते हैं, पर हमें कुछ मालूम नहीं होता। वरुण के 'स्पशों' (चरों) का यह कमाल देखो! यह परम गुप्तचरता देखो! वे हज़ारों आँखोंवाले, असंख्यों प्रकार से देखनेवाले 'स्पश', देश काल आदि के सब व्यवधानों को अतिक्रमण करके सब ठीक ठीक देखते हुवे ब्रह्माण्ड भर में विचर रहे हैं और नियम भंग होते ही हमें बांध रहे हैं तथा इस तरह बांध रहे हैं कि हमारा वह बन्धन (पाश) तक तक नहीं टूटता है जब तक कि हम उसके प्रतिफल को भोग नहीं चुकने। वरुण राजा की ऐसी परिपूर्ण राज्य-व्यवस्था है। हे मनुष्य भाइयो! यदि हम उस अपने पापनिवारक राजा की इस अटल व्यवस्था को समझ जायँ, सचमुच जान जायँ, तो इतने से ही हमारे सब पाप निवृत्त हो जायँ।

शब्दार्थ

(**यः उत**) जो भी कोई जीव (**द्यां अति**) द्युलोक को पार करके (**परस्तात्**) उससे भी परे (**सर्पात्**) चला जाय (**सः**) वह भी (**वरुणस्य राज्ञः**) वरुण राजा से (**न मुच्यातै**) मुक्त नहीं हो सकता, बच नहीं सकता। (**दिवः अस्य**) प्रकाशस्वरूप इस वरुण के (**स्पशः**) गुप्तचर (**इदं**) इस सब ब्रह्माण्ड में (**प्रचरन्ति**) अच्छी तरह घूम रहे हैं जो (**सहस्राक्षाः**) हजारों आंखोंवाले होकर (**भूमिं**) इस भूमि को (**अति पश्यन्ति**) अतिक्रमण करके देख रहे हैं-जिसे अन्य नहीं देख सकते उसे भी देख रहे हैं।

सम्पादकीय....

सुधारक पत्र का लक्ष्यः सुधार करना है।

जो व्यक्ति अविद्या के कारण अज्ञानान्धकार में रहते हुए अपने अमूल्य मानव जीवन का सदुपयोग नहीं कर पा रहे, उन्हें इस सुधारक पत्र के द्वारा सन्मार्ग दिखाने का प्रयास किया जाता है। इस पृथ्वी पर जितने भी शरीरधारी जीव हैं, उनमें सर्वश्रेष्ठ मानव शरीर है। इस शरीर में भी बुद्धि सर्वोत्तम है। यदि बुद्धि ठीक है तो पक्षपातरहित विद्वानों से परामर्श करके तथा सद्ग्रन्थों से विचारपूर्वक सत्यासत्य का निर्णय कर सकता है। आज भारत में ही अनेक पन्थ, मत, सम्प्रदाय, गुरुडम आदि का बाहुल्य है। यदि बुद्धिमान् व्यक्ति विवेक से काम ले तो सत्यमार्ग को प्राप्त कर सकता है। उदाहरण के लिए गणेश को ही लें, पुराणों में वर्णित गणेशोत्पत्ति की कथा को कोई भी विवेकवान् व्यक्ति सत्य मानने को कभी भी उद्यत नहीं हो सकता। क्या इस मानवजाति में ऐसा बच्चा कभी उत्पन्न हुआ है जिसे गणेश के रूप में दिखाया जाता है। इसकी उत्पत्ति का संक्षिप्त वर्णन इस प्रकार है—

पार्वती स्नान करना चाह रही थी, शिवजी कहीं बाहर गये हुए थे। स्नान करते समय कोई बाहर का व्यक्ति न आ जाये, इसलिये किसी पहरेदार की आवश्यकता अनुभव हुई। ऐसा व्यक्ति नहीं मिलने पर पार्वती ने अपने शरीर से मैल उतार कर उससे गणेश का शरीर तैयार करके उसमें प्राण डालकर उसे द्वार रक्षक के रूप में खड़ा कर दिया। कुछ समय पश्चात् शिवजी घर वापिस आये तो द्वार रक्षक गणेश ने उन्हें भीतर नहीं जाने दिया और कहा कि मेरी माता जी स्नान कर रही हैं अतः आप भीतर नहीं जा सकते। शिवजी को आश्चर्य हुआ कि थोड़े समय के लिए बाहर जाते ही मेरे घर में मेरा इतना बड़ा पुत्र हो गया और मुझे पता तक नहीं। फलतः दोनों तथाकथित पिता-पुत्र झगड़ने लगे और दस हजार वर्ष तक लड़ते रहे। अन्त में शिवजी ने गणेश का सिर काट दिया और घर में प्रविष्ट हो गये। इस पर पार्वती ने घबराकर कहा- आप भीतर कैसे घुस आये, मैं स्नान कर रही हूं। शिवजी ने कहा द्वार पर जो रक्षक बैठा था, उसे मारकर भीतर आया हूं। इस पर पार्वती ने कहा- वह तो मेरा पुत्र था आपने उसे क्यों मार दिया, उसे जीवित करो। शिवजी बाहर आये तो गणेश का सिर नहीं मिला, शेष धड़ वहीं पड़ा था। अतः उधर से जाते हुए एक हाथी का सिर काट कर गणेश के धड़ से जोड़कर उसे जीवित कर दिया, यह है गणेशोत्पत्ति की कथा।

इस विषय में बुद्धिमान् व्यक्ति विचारें कि—

1. क्या पार्वती का घर ऐसा था, जिसमें स्नानागार और उसके किबाड़ भी न हों।

2. क्या पार्वती इतनी गन्दी थी कि उसके शरीर से इतना मैल निकला कि उससे एक व्यक्ति का शरीर बन गया।

3. दोनों पिता पुत्र दस हजार वर्ष तक द्वार पर लड़ते रहे तो उन्होंने बिना खाये पीये इतना बल कैसे प्राप्त कर लिया और इतने समय तक पार्वती स्नान ही करती रही, उसे बाहर होने वाले युद्ध का भी ज्ञान नहीं होने पाया।

4. हाथी का सिर काटने की अपेक्षा क्या थोड़ा-बहुत मैल नहीं बचा होगा, उसी से सिर भी बनाया जा सकता था।

5. पिता को पता भी नहीं लगा और उसके घर में युवा और शक्तिशाली पुत्र भी उत्पन्न हो गया, क्या शिवजी वर्षों तक घर से बाहर ही घूमते रहे।

6. बेचारे हाथी का क्या अपराध था जो उसका सिर काट दिया।

7. हाथी के बड़े सिर को व्यक्ति के छोटे धड़ पर प्रत्यारोपण करने का कौन-सा उपाय अपनाया होगा। उस समय वहां कौनसी प्रयोगशाला थी, जिसमें जाकर तुरन्त यह कार्यवाही की गई।

8. सिर काटने पर भी गणेश इतनी देर तक जीवित कैसे रहा?

इसमें सचाई यह है कि शिवजी के दो पुत्र थे गणेश और कार्तिकेय। दोनों सेनापति थे। गणेश का जो रूप आजकल दिखाया जाता है वह इसका कार्टून है। आज भी कलाकार कार्टून के माध्यम से बहुत बड़ी बात समझा देते हैं।

गणेश सेनापति था तो सेनापति के गुण इस कार्टून में दिखाये गये हैं— चूहे की सवारी- सेनापति को अपना दुर्ग ऐसा बनाना चाहिये जैसे चूहे का बिल। बाहर से एक द्वार, परन्तु भीतर से अनेक गुप्त गृह। वाहन का अर्थ है झण्डा। **यस्य यो वाहनः प्रोक्तो ध्वजस्तस्य तथैव तु।** गणेश के झण्डे का चिह्न चूहा था। सेनापति के कान इतने बड़े होने चाहियें कि सब की बातें सुन सके। पेट इतना बड़ा इसलिए कि राज्यभर के सभी समाचार एकत्र हो जायें। परशु तो सेनापति का हथियार ही है। शिवजी को नन्दीध्वज कहा गया है। शिवजी के झण्डे का चिह्न बैल था। उसे आजकल शिवकी सवारी बनाकर शिव को उस पर बैठाया भी जाता है। आजकल ग्रामीण अनपढ व्यक्ति भी बैल की पीठ पर कभी नहीं बैठता, तो शिवजी सदृश महापुरुष ऐसा कभी नहीं कर सकता था। कार्तिकेय को मोर पर बैठाया दिखाया जाता है परन्तु मयूरध्वज नाम से स्पष्ट सिद्ध है कि कार्तिकेय के झण्डे का चिह्न मोर था। क्या मोर पर कोई व्यक्ति बैठ सकता है? इसी प्रकार सरस्वती की पतिमा को हंस पर बैठाया जाता है। हंस नाम विद्वान् का है। परमहंस महाविद्वान् को कहते हैं। सरस्वती विद्या का नाम है। विद्या हंस=विद्वान् पर ही स्थित होती है। इसको न समझकर हंस पक्षी पर सरस्वती को बैठा दिया गया।

अर्जुन को कपिध्वज कहा है, परन्तु अर्जुन को बन्दर पर बैठा नहीं दिखाया गया, यहां बुद्धि का प्रयोग सही हो गया। अर्जुन के झण्डे का चिह्न बन्दर था। इसी भांति हनुमान् के एक हाथ में गदा पकड़ाकर दूसरे हाथ में पर्वत उठाकर उड़ता हुआ दिखाते हैं ये असम्भव बातें सृष्टिक्रम से सर्वथा प्रतिकूल हैं।

शिव, विष्णु के चार-चार हाथ, ब्रह्मा के चार हाथ, चार मुख बनाते हैं। सोचिये ब्रह्मा चारों मुखों से खाता था तो पेट तो एक ही था; वह फट नहीं जाता होगा। सोते समय एक मुख तो सदा नीचे ही रहता होगा। ब्रह्मा चारों वेदों का ज्ञाता था, अतः इसे चतुर्मुख की उपमा दी गई थी, परन्तु अज्ञानी लोग अनर्थ कर देते हैं।

लक्ष्मी का वाहन = सवारी उल्लू बनाई है। इससे प्रतीत होता है कि यह तो किसी सीमा तक उचित है। लोक में हम प्रायः देखते हैं कि अतुल धन सम्पदा के मालिक अपनी बड़ाई के लिए ऐसे स्थानों पर भी धन दे देते हैं जिसका उपयोग सार्वजनिक कल्याणार्थ नहीं हो पाता। ऐसा दानी उल्लू = मूर्ख की भांति आचरण करने वाला माना जाता है।

तथाकथित गुरु लोग अपने भक्तों को अपनी टोली से बाहर नहीं जाने देते। गुरु को चढावा चढा दो, दान दक्षिणा दे दो, खान-पान वस्त्रादि से सेवा कर दो फिर चाहे दिन-रात कुछ भी करो, गुरु का नाम लेने से सब पाप दूर होने का भ्रम पाले रखते

हैं। लाल-काला डोरा कलाई में बांधने से, नाव की कील या घोड़े के तहनाल से बने छल्ले अंगुली में पहनने से क्रूर बाधाओं की समाप्ति का भ्रम भी अज्ञान का प्रतीक है।

कुछ अन्धश्रद्धालु ग्रीष्म की तपती सड़कों पर लेट-लेटकर अपने अभीष्ट देव तक पहुंचकर कामनापूर्ति की आकांक्षा रखते हैं। कुछ समूह विभिन्न प्रकार के झण्डे लेकर पैदल ही राजस्थान के बालाजी आदि पर मनौती मनाने जाया करते हैं। यात्रा समाप्ति पर शारीरिक कष्टों से कई दिन तक परेशान होते रहते हैं परन्तु कामना पूर्ति नहीं होने पर निराश होकर बैठ जाते हैं। इसी प्रकार उत्तरी भारत के पहाड़ी क्षेत्रों में पुजारियों ने अनेक तीर्थस्थल बनाये हुए हैं जो अन्धश्रद्धालुओं के कारण उनकी जीविका का साधन बने हुए हैं। क्या ये पुजारी भी कभी किसी तीर्थयात्रा पर जाकर पुण्य कमाने का यत्न करते हैं? कभी नहीं। क्योंकि यदि यह भी जाने लगे तो इनकी जीविका मारी जाये।

इस सुधारक पत्र के द्वारा हमारी इच्छा यह है कि जनता अपने कल्याण की कामना से इन पाखण्ड के स्थानों में न जाकर अपने माता-पिता, हितैषीजन तथा सच्चे गुरुओं से मार्गदर्शन पाकर जीवन को उन्नत बनाने का यत्न करें। इस प्रकार अगले पचास वर्षों में जाकर भारत की भावी पीढी देश की वास्तविक उन्नति की ओर अग्रसर हो पायेगी। सन् 1835 की मैकाले की नीति आज तक भी भारत के जनमानस पर हावी होकर बैठी है। वैदिक धर्म की सच्चाई यदि अभी से युवा पीढी को दी जायेगी तो इनकी दूसरी तीसरी पीढी तक भारत से भ्रामक मान्यताएं दूर होनी प्रारम्भ हो सकती हैं। वर्तमानशासकों की नीति से तो इस कार्य की आशा नहीं है, परन्तु धार्मिक सच्चे उपदेशक इस कार्य में सहायक हो सकते हैं।

—विरजानन्द दैवकरणि

किसान, गोभक्तजन आगे आकर गोवंश हत्या रोकें

सदियों से अहिंसा का पुजारी भारत वर्ष आज हिंसक और मांस-निर्यातक देश के रूप में उभरता जा रहा है। 85 प्रतिशत हिन्दू-समाज होने के बावजूद गोवंश की हत्या जारी है। जिस गोवंश, विशेष रूप से बूढ़े गाय, बैल, भैंस आदि को हम रुपयों के लोभ में बेच देते हैं, वह पशुधन सीधे कसाई के पास पहुँच जाता है। इस प्रकार हम अप्रत्यक्ष रूप सें गोहत्या में शामिल हो जाते हैं।

जो गोवंश झुण्ड-के-झुण्ड खरीदे जाते हैं, वे अधिकांश कत्लखाने ले जाये जाते हैं। जहाँ मांस एवं चमड़े के लिये उन्हें बड़ी बेरहमी से मारा-काटा ज़ाता है।

विडम्बना है कि एशिया का सबसे बड़ा कत्लखाना पाकिस्तान में नहीं, बल्कि भारत के महाराष्ट्र प्रान्त में है, जहाँ प्रतिदिन हजारों मवेशी काटे जाते हैं और हर रोज कटा हुआ ताजा मांस विशेष मालवाहक हवाई जहाजों से विदेशों को जाता है।

दूसरी अल-कबीर गोवधशाला आन्ध्रप्रदेश में है। इस आधुनिक कत्लखाने में 6 हजार गौएँ, इससे दुगुनी भैंसें तथा पँड़वे काटे जाते हैं। इसका 20 हजार टन मांस के निर्यात का अनुबन्ध ईरान और कुवैत से हुआ है। इस कत्लखाने में प्रतिदिन 10,000 लीटर रक्त एकत्र होता है।

कत्लखाने में स्वस्थ गौओं को मौत के कुएँ में 4 दिन भूखा रखा जाता है। अशक्त होने से गिरने पर पशु को घसीटकर मशीन के पास ले

जाया जाता है फिर उसे पीट-पीटकर खड़ा किया जाता है। मशीन की एक पुली पशु के पिछले पैरों को जकड़ लेती है, तत्पश्चात् 200 डिग्री सेण्टीग्रेटका गरम पानी 5 मिनट तक उस पर गिराया जाता है। पुली पिछले पैर को ऊपर उठा देती है और फिर उलटे लटके पशुकी आधी गर्दन काट दी जाती है ताकि खून बाहर आ जाय और पशु मरे नहीं, खून की धारा बह निकलती है। तत्काल पशु के पेट में एक छेद करके हवा भरी जाती है, जिससे पशु फूल जाता है। उसी समय चमड़ा उतारने का कार्य होता है। पशु अभी मरा नहीं। मरने से पशु का चमड़ा मोटा हो जाता हैं, जीवित पशुका चमड़ा पतला ओर कोमल होने से उसका मूल्य अधिक होता है। चमड़ा उतारने के बाद पशु के चार टुकड़े किये जाते हैं-गर्दन, पैर, धड़ और हड्डियाँ। भारतीय गोवंश तथा अन्य पशुओं का मांस दुबई में मँहगे दामों में बिकता है।

गर्भवाले पशुका पेट फाड़कर निकाले गये जिन्दा बच्चे से काफ लैदर बनाया जाता है। गर्भवाला पशु कसाइयों के लिये अत्यधिक लाभदायक होता है।

आज देश में वैध तथा अवैधरूप से हजारों कत्लखाने चल रहे हैं, जिनमे प्रतिदिन लाखों की संख्या में पशुधन काटा जाता है। यदि गोवंश के वध पर रोक नहीं लगायी गयी तो सन् 2030 ई० तक भारत पशुविहीन हो जायेगा।

अत: किसान तथा गोभक्तजनो! जागो और आगे आकर गोवंश की हत्या रोको। मूक-निरीह पशुओं की रक्षार्थ तन-मन-धन से सहयोग करना सबका नैतिक कर्तव्य है।

नशा नाश की निशानी : शराब तथा धूम्रपान

ऐ शराब पीने वालो!

शराबी को शराब कह रही है कि मेरा काम है जो मुझे पीयेगा उसका सर्वनाश किये बिना नहीं छोड़ती, क्योंकि सर्वनाश करना मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है। जितने भी धर्मशास्त्र हैं, उनमें सुरापान को महापापों की जड़ बताया है। यह मनुष्य को राक्षस बना देती है। ये नशे समाज और देश को नष्ट कर देते हैं और कर रहे हैं।

सुनिये- एक सज्जन से एक दुर्जन नशेबाज की वार्ता—

सज्जन- हे शराबी क्या आप मांस भी खाते हो, हाँ शराब और मांस दोनों पीता खाता हूँ।

सज्जन- क्या आप वेश्याओं के पास भी जाते हो, हाँ उनके साथ मिल के पीयें खायें तो अच्छा लगता है।

सज्जन- वेश्यायें तो धन चाहती हैं, आप धन कहाँ से लाते हो?

शराबी- मैं चोरी और जुआ खेलकर पैसा लाता हूँ।

सज्जन- अच्छा आप चोरी भी करते हो और जुआ भी खेलते हो?

शराबी- हाँ जो नष्ट होना चाहे उसका और काम ही क्या है।

किसी कवि ने कहा है—

मुल्कों-मुल्कों की सैर करना,
यह तमाशा किताब में देखा।
दाम दे करके जूतियाँ खाना,
यह तमाशा शराब में देखा।।

जैन मत में शराब का निषेध

शराब के आधीन होकर मनुष्य तरह-तरह के निन्दनीय कर्म करता है। उसे इस लोक में भी अनेक दु:ख भोगने पड़ते हैं, और परलोक में भी दु:ख भोगता है। शराबी की जेब में जो कुछ धन या वस्तु होती है उसे दूसरे लोग ही छीनकर ले जाते हैं। होश आने पर उसे पाने के लिये इधर-उधर मारा-मारा ढूँढ़ता फिरता है। शराब पीने से बुद्धि नष्ट हो जाती है।

शराब के विषय में महात्मा बुद्ध का सन्देश

1. हे मनुष्यो!-तुम सिंह के सामने जाते समय भयभीत न होना। वह पराक्रम की परीक्षा है। तुम तलवार के नीचे सिर देने से भयभीत न होना-यह बलिदान की कसौटी है। तुम बढ़ती हुई ज्वालाओं से विचलित न होना-वह धैर्य की परीक्षा है। परन्तु शराब से सदा भयभीत रहना-यह पाप और अनाचार की जननी है।

2. जिस राजा के राज्य में यह 'सुरा' आदर पाती है वह राज्य शीघ्र ही नष्ट-भ्रष्ट हो जाता है। इतिहास में इस बात के कितने ही प्रमाण हैं। इस बुराई के कारण कई साम्राज्य मिट्टी में मिल गये। वृष्णि वंश की यादव जाति इस बुराई के कारण नष्ट हुई। रोमन देश के पतन का मुख्य कारण यही पापिनी शराब ही थी। शराब से बढ़कर कोई ऐसी नशीली वस्तु नहीं है जो मनुष्य के नाश में लगी हो। यह शराब तो जहर से भी बुरी है जहर से तो शरीर ही मरता है। परन्तु शराब से तो सारा परिवार ही उजड़ जाता है।

गुरु ग्रन्थ साहब में गुरु नानकदेव ने कहा है-

माड़ा नशा शराब दा, उतर जाये प्रभात। नाम खुमारी नानका, चढ़ी रहे दिन रात।

गुरु नानकदेव जी कहते हैं, इस शराब को मत पीवो, इनके पीने से बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है पेट में विकार हो जाते हैं और अपने-पराये का ध्यान नहीं रहता। उनके तीर्थ स्नान, व्रत, उपवास सब नष्ट हो जाते हैं और इसके पीने वाले सब नरक में जाते हैं, नाली के कीड़े बनते हैं। इसलिये थोड़ा-सा बुद्धि से साचिये और समझिये। क्या आप शराब पीने जा रहे हैं? यदि हाँ तो

रुकिये और सोचिये—

1. वह कौनसी वस्तु है जो शरीर, बुद्धि और आत्मा का विनाश कर देती है?

2. वह कौनसी वस्तु है जो दुराचार और अपराधों की जननी है?

3. वह कौनीसी वस्तु है जो मनुष्य को दोपाया पशु बना देती है और सुखी घर को नरक बना देती है। उनके बच्चे दाने-दाने को मोहताज़ हो जाते हैं और घरवाली ज़हर खाकर बच्चों सहित मर जाती है। अरे कुछ तो विचारो? क्या इन नशों को छोड़ कर तुम नेक इन्सान नहीं बन सकते?

याद रखिये

बड़े पुण्य कर्मों के बदले में यह सुन्दर मनुष्य तन मिलता है इसे नशों में पड़कर बरबाद मत करो। यह जीवन अनमोल है। इसे श्रेष्ठ चरित्र वाला बनाओ। आज ही प्रतिज्ञा करो इन बुरे कर्मों को छोड़ने की और परमात्मा से प्रार्थना करो कि हे परमात्मा हे पिता मुझे इन पाप कर्मों से बचाओ।

न करो बरबाद जीवन को, ऐ नशों के दीवानो।
वही काटोगे तुम बुढ़ापे में, जो बोवोगे ज़वानी में।।

शराब जान और माल दोनों को लूटती है। याद रखिये-डाकू तो माल लेकर जान छोड़ देता है किन्तु यह पिशाचिनी शराब तथा नशे जान और माल दोनों को लूट लेते हैं और नशेबाज़ जल्दी ही

मौत के घाट उतर जाते हैं। भाँग कहती है, हे गधे! तू मुझे क्यों नहीं खता। गधा उत्तर देता है-हे भाँग! तेरे पीने से मनुष्य भी गधे बन जाते हैं फिर गधे की क्या दशा होगी ? हे नशा करने वालो नशों से बाज़ आओ। मैं सत्य कहता हूँ कि नशे छोड़ो मैं तुम्हें गरीब से अमीर बना दूँगा। नशे छोड़ो, मैं तुम्हें लखपति बनवा दूँगा। नशे छोड़ो मैं तुम्हारी बुढ़ापे की पैन्शन बनवा दूँगा। जितने रुपये आप रोज़ाना नशों में खोते हो, मांस, अण्डे, शराब, अफीम, भाँग, सुल्फा, गाँझा, हुक्का, बीड़ी, सिगरेट गुटखे खाने में खर्च करते हो, उतने रुपये रोजाना बचाकर एक लोहे की गुल्लक या डिब्बे में डाल दिया करो और हर महीने में इन्हें निकाल कर डाकखाने में खाता खोलकर डाल दिया करो कुछ ही वर्षों में आप लखपति बन जायेंगे। इसलिये सब मनुष्यों को इन सारे नशों का सर्वथा त्याग करके प्रतिज्ञा करनी चाहिये और अपने बचे हुये जीवन को अच्छे कार्यों में लगाना चाहिये जिस ईश्वर ने इतना सुन्दर शरीर दिया है उस ईश्वर की भक्ति में, उसकी उपासना में जिसका मुख्य नाम ओ३म् है, जो आपकी हर समय रक्षा करता है उसका ध्यान करें। वेद, शास्त्र, उपनिषदों को, सत्यार्थप्रकाश को पढ़ें, जिससे आपका जीवन सुधरे।

हुक्का, बीड़ी, सिगरेट पीने वालो ध्यान से समझो

आप अपने मुख से निकला हुआ झूठा धूवां आपके रोग भी जिसमें मिले हुये हैं उसे आप दूसरों के अन्दर हवा के द्वारा जबरदस्ती डालते रहते हो इसके पाप के भागी आप ही तो बन रहे हैं। जैसे हम अपने मुख में से भोजन निकाल कर दूसरे को नहीं खिला सकते वैसे ही यह झूठा धूवां भी हवा के द्वारा दूसरों के अन्दर उनके सांस द्वारा रोगों सहित जाकर दूसरों को रोगी बनाता है इसलिये इस महापाप से बचो, आज ही प्रतिज्ञा करो कि हम हुक्का, बीड़ी, सिगरेट का सेवन नहीं करेंगे। **(सब प्रकार के नशे छोड़ने के लिये अनुपम औषधि)** सौ ग्राम अजवायन-बारीक, पचास ग्राम सोंप बारीक लेकर उसे तीन बार धोकर उसे दूसरे बर्तन में उतार लें, नीचे जो कंकर पत्थर बचे उसे अलग करें फिर पानी में उतारी हुई अज़वायन एक कपड़े में डालकर पानी को सुखा दें और ठण्डा होने पर शीशी भरकर रख लें थोड़ा सा चूर्ण एक पुड़िया में अपनी जेब में रखें और जब नशे की तलब उठे तो एक चुटकी चूर्ण मुख में डालकर रस चूसते रहें इसे थूकना नहीं है। **(इस दवाई से लाभ)** गैस, अफारा, बदहज़मी, खट्टी डकारें दूर करके नशे की आदत से छुटकारा दिलाती है और पेट को साफ़ करके कब्ज को दूर करती है।

परहेज़— नशे की वस्तु को बिल्कुल त्याग दें और अपने मन में प्रतिज्ञा करें कि मैं अब किसी भी नशे की वस्तु का सेवन नहीं करूँगा और एक अच्छा धार्मिक इन्सान बनकर अपने बचे हुये जीवन से धर्म के कार्य करूँगा।

हे प्रभु मुझे बुरे कर्मों से छुड़ाकर अच्छे कर्म करने में लगाओ। ऐसी प्रार्थना ईश्वर से नित्यप्रति करनी चाहिये।

अन्त में मैं यही कहूँगा, अय! पिशाचनी शराब तूने, कौमों को मिटाके छोड़ा। जिस घर में तू घुसी, तूने उसे मिटा के छोड़ा।

राजाओं के राज छीने, शाहों के ताज़ छीने, इन नशेबाज़ों को तूने जड़ से मिटा के छोड़ा। धन्यवाद।

राममुनि आर्य वानप्रस्थ,पैट्रोल पम्प के सामने वाली गली, झज्जर रोड (कमला नगर) रोहतक (हरियाणा) मो०- 09034865073

पशुओं के घरेलू उपचार हेतु लाभकारी परीक्षित देशी नुस्खे।

1. बुखार, मुंह-खुर रोग में— ठेकरी नौशादर= 3 ग्राम सौंठ= 10 ग्राम दोनों को 1¼ लीटर पानी में मिलाकर पिला दो।

2. पुराना गुड़ 1 कि० ग्रा०, बड़ी सौंफ 250 ग्रा०, एक कि० पानी में पका छानकर ठण्डी करके पिला दो।

3. दस्तों में— कच्ची बेलगिरी का सूखा या गीला गुद्दा= 250 ग्रा०, खड़िया मिट्टी= 25 ग्रा० छाछ या जल में घोलकर प्रात: सायं पिलाएं। चावल के माण्ड में दे सकते हैं। या धनियां के सूखे बीजों का चूर्ण= 50 ग्रा०, जौ का आटा= 500 ग्रा०, सैंधा नमक= 10 ग्रा० को पानी में मिलाकर दो बार दिन में दें। खून गिरना भी बन्द हो जायेगा। या ये दें।

4. छिल्का इसबगोल— 50 ग्रा० दही-छाछ या पानी में घोलकर तुरन्त पिला दो, खूनी दस्त-मरोड़ी के दस्तों में अति उत्तम है, दिन में दो बार दें। सौ ग्रा० तक भी।

5. दस्तों के लिये— छोटी-बड़ी दूधि को धो सुखाकर ½ कि० ग्रा०- 1 कि० ग्रा० तक खिला दें। गारन्टी है। शुगर-मधुमेह रोग में भी लाभकारी है कई दिन दें। धोकर-पानी झाड़ करदें।

6. पशुओं के फूल दिखान में भी लाभकारी है कई दिन दें।

7. प्रोलैप्स आफ यूट्रेश— ब्याने पर या पहले फूल दिलाने में= कई डेरी वालों के अनुभव से साभार= ढाक वृक्ष का गौंद (ढाक की कणी)= 50 ग्रा०, सफेद राल= 50 ग्रा०, रसौंत= 50 ग्रा० को- 300 एम०एल० जल में थोड़ा कुट कर कुछ समय भीगो दें। फिर छानकर उपर की दोनों दवा कूट कर इसके पानी में मिला लें-चाहे नाल-नलकी से दें या चने-गेहूं के आटे में मिला कर दें-थोड़ा मीठा या नमक मिला सकते हैं। कैल्सीयम की बोतल से भी कारगर।

8. हड्डी-पसली-गुम चोट में= दोनों फिटकड़ी-लाल-सफेद में से एक लें, छोटी डली बना कढ़ाई में गर्म कर फूल बना लें, मात्रा= 10 से 20 ग्रा०, खाने की हल्दी= 25 ग्रा० हल्वे (कढ़ाह) में मिला दें या घी बूरा में मिलाकर कई दिन दें उत्तम है।

9. गुम चोट या भार ढोने वाले पशु को ज्यादा जोर लगाने से झटका लग जाता है-फ्रेक्चर और बाय के लिये= ढाक-कीकर (बबूल) या खैर किसी एक का गौंद 200 ग्रा०, सफेद राल 200 ग्रा०, आम्बा हल्दी= 200 ग्रा०, सफेद मुसली= 200 ग्रा०, मेदा लकड़ी= 200 ग्रा०, हलम= 200 ग्रा०, कुरण्ड= 200 ग्रा०, कोई 1-2 ना भी हो तो भी चलेगा। गौंद आम्बा हल्दी जरूर हों। चूर्ण बना कर मात्रा= 50 ग्रा० दूध से रोज एक बार दें। इस का लेप भी जल में मिला कर करें। टूटे तन्तु जुड़ेंगे, खिलाने से नये बनें गे, मांसपेशी मजबूत होंगी-टांनिक है। हां सिर्फ बाय में सैंजने का गौंद लाभकर है।

10. गठिया बाय में= मेथीदाने का आटा ½ से 1 कि० ग्रा०, अजवायन (जमाण) साफ 30 से 50 ग्रा० कूट कर गुड़ ½ कि० ग्रा०, रोज 1-2 बार पशु को खिलाएं। कब्ज ना हो हरा चारा देते रहें।

11. जहरीले कीड़े के काटने पर= सिरस

वृक्ष के पत्ते-छाल आदि= 250 ग्रा० पानी 1½ कि० ग्रा० में पकाएं ½ कि० ग्रा० रहने पर ठण्डा कर पशु को पिला दें। दिन में दो बार दें। जहां काटा हो वहां मुलतानी मिट्टी या भूमि से एक इंच नीचे की मिट्टी का लेप कई बार करें। सूखने पर उतार दें। पशु को पानी में लिटाओ, डॉ० को दिखाओ, लोहा भीतर गया हो तो आमला पिलाओ। ईसबगोल जल में घोलकर दो।

12. पेशाब का बंधा= ठीकरी नौशादर 25 ग्रा०, 2 कि० ग्रा० छाछ में मिला पिलाओ या कल्मी शोरा 20 ग्रा० जल में घोल पिलाओ, पशु को पानी में लिटा दो। कब्ज हटाओ। अमृतधारा की 30-40 बूंद किसी तेल में डालकर मसाने की हल्की मालिश करने से शीघ्र मूत्र आयेगा। तेल- 40-50 ग्रा० हो। पथरी भी हो सकती है। पानी पिलाओ।

कटड़े-बछड़ों के बंधे का बचाव— नौशादर 20 ग्रा० सप्ताह में 1 बार दें। (डॉ० विजय भिवानी)

13. हाजमे के लिये— त्रिफलाचूर्ण= 3 कि० ग्रा०, पवाड़ बीज 1 कि० ग्रा०, राई ½ कि० ग्रा०, सौंठ= 1 कि० ग्रा०, जमाण (अजवायन) ½ कि० ग्रा०, सूखी कचरी 1 कि० ग्रा०, सैंहजना वृक्ष छाल 1 कि० ग्रा०, सैंधा नमक 1 कि० ग्रा० बना लें, दो साल काम देगा।

14. लू लगना (हीट स्ट्रोक) 6-7 कच्चे आमों को पकाकर छिलका उतार कर चीनी और नमक 3-4 कि० ग्रा० पानी में मिलाकर पिलाएं उत्तम है या इमली या निम्बू शर्बत पिलायें।

15. पैरों में खारवे होने पर वर्षा में होते हैं। फिटकड़ी चूर्ण बुरकें या फिटकड़ी के पानी से धोएं।

16. सभी प्रकार के घाव— जले घाव व गीली गंगरीन के व जहरीले भिरड़ आदि काटने पर उत्तम विंसक्रमित हैं। स्वर्णक्षीरी तेल, जात्यादि तेल, अपमार्ग तेल को लगायें। बने हुए मिलते हैं। इनसे बढ़कर कोई अन्टीसैप्टीक नहीं ।

17. गर्भ धारण के लिये— पशु को रोज घुमाओ, मेथी आटा= 250 ग्रा० गुड़ मिलाकर 4 दिन दें या, बैंगन-मसूर 1-1 कि० ग्रा० पानी में पका 4 दिन दें।

18. ब्याने पर (प्रसूता होने) गुड़ ¾ कि० ग्रा०, सौंठ= 10 ग्रा०, मेथी= 50 ग्रा०, अजवायन= 20 ग्रा०, 3 कि० ग्रा० जल में पका कर 5 दिन दें। फूल दिखाये ना दें।

19. जेर गेरेगी:- गुड़ ½ कि०, सौंठ= 10 ग्रा०, जमाण= 20 ग्रा०, बेलगिरी ½ कि० ग्रा०, 2 कि० ग्रा० जल में पकाकर ठण्डा करके पिलायें, दो बार दो यानी दो खुराक दें। पशु को आम के पत्ते खिलाओ।

20. दूध बढ़ाना:- गुड़ ½ कि० ग्रा०, जौ 4½ कि० ग्रा० रोज दें, पशु बहुत दिन दूध देगा। या ये योग दें:- जीरा-शतावर-विदारीकन्द का चूर्ण बना 1 मास खिलायें। गिलोय पत्ती से भी बढेगा।

21. चारे की फसलों पर छिड़कने के लिये कीट नाशक:- देशी किसम की गाय या बैल का मूत्र= 10 कि० ग्रा०, नीम पत्ती टहनियों समेत कूटकर 2½ कि० ग्रा०, 15 दिन सड़ा कर छानकर 1 कि० ग्रा० दवा को 100 लीटर जल में मिला स्प्रे करें। सब तरह की फसलों पर काम करेगा। (गौ संदेश पत्रिका पानीपत से (2-9-2005)

22. दूसरा नुसखा:- 2½ कि० ग्रा० टहनियां समेत नीम पत्ति कूट कर घर की हल्दी=

300 ग्रा० देशी किसम की किसी गाय का मूत्र चाहे दो-तीन दिन का हो= 5 कि० ग्रा०, गोबर 1 दिन का= 5 कि० ग्रा०, पानी= 20 लीटर मिला रखें, तीन दिन बाद छानकर 200 लीटर जल में मिला स्प्रे करें। यह सब्जी और फलदार वृक्षों पर भी कारगर है।

23. पशु का चमला— एग्जीमा= रसकपूर 1 भाग, तिल तेल= 2 भाग; फिनायल= 2 भाग, सब को मिला लगाया करें। **घाव** हो जाने पर ना लगायें। फिर विसंक्रामित दवा की पट्टी करें।

24. कैंसर रोग:- इस में अकुंरित अन्न लाभकारी है। चने-जौ० गेहू-मूंग आदि। बिना रसायनिक खाद का गेहूं-जई-ज्वार आदि का हरा चारा देते रहें। पहली दूसरी स्टेज का रोगी पशु ठीक होगा-पशु को नमक व मीठा ना दें।

25. गौमूत्र में निम्न रसायनिक तत्त्व पाये गये हैं। बहुत अनुभवी राजवैद्य रेवाशंकर शर्मा की पुस्तक है— राजस्थान गौसेवा संघ दुर्गापुर-जयपुर तथा आचार्य आर्यनरेश (आर्य प्रकाशन कुण्डे वालान अजमेरी गेट दिल्ली। ये दोनों रिर्सचर हैं।

1. नाईट्रोजन NH_2 मूत्रल गुर्दे का प्राकृतिक उत्तेजक रक्त-विष को निकालता है।

2. सल्फर- रक्तशोधक

3. अमोनियां NH_3 = शरीर धातुओं और रक्त संघटन को स्थिर करता है।

4. अमोनियां NH_2 = नं० 3 की तरह काम करती है।

5. कापर— ताम्र (CU) अनुचित चर्बी बनने को रोकता है।

6. आयरन— लौह (Fe) रक्त में लाल कणों का निर्माण बनाये रखता है। कार्यशक्ति स्थिर रखता है।

7. यूरिया= मूत्र उत्सर्ग पर प्रभाव करता है। किटाणु नाशक है।

8. यूरिक एसिड (URIC ACID) ($C_5H_4N_4O_3$) हृदय शोथ नाशक, मूत्रल होने से विष शोधक है।

9. फॉसफेट (P) मूत्रवाही संस्थान से पथरी कण निकालने में सहायक।

10. सोडियम— रक्तशोधक अम्लता नाशक/सोडियम ... Anti Acid है।

11. पोटेशियम (K) आमवात नाशक, भूख बढ़ेगी-मांसपेशी दौर्बल्य, आलस्य मिटाता है।

12. मगनीज= कीटाणु नाशक, कीटाणु बनने से रोकना, गैंगरीन सड़ांध से बचाता है। कार्बोलिक एसिड (HCOOH) कीटाणु नाशक-बनने से रोकना-गैंगरन सड़ांध से बचाता है।

13. कैल्शियम खटिफ (Ca) अस्थि पौषक-जन्तुघ्न-रक्तसकन्दक है।

14. साल्ट-लवण (NaCl) अम्लरक्तता नाशक, जन्तुघ्न।

15. विटामिन A.B.C.D.E. जीवनीय तत्व हैं, उत्साह स्फूर्ती बनाये रखना, घबराहट प्यास से बचाता है। हड्डी पोषक प्रजनन शक्ति दाता है।

16. अन्य मिनरलस— रोगरोधक ताकत बढ़ाते हैं। जिसे आधुनिक एम्यूनिटी कहते हैं।

17. लेक्टोज ($C_6H_{12}O_6$) मुख की सुकड़न, हृदय हेतु बलदायक-स्वास्थकर प्यास घबराहट मिटाता है।

18. ENZYMS— आरोग्यकारक-

पाचक रस बनातें रोग रोधक शक्ति बढ़ाते हैं।

19. जल (H_2O) जीवनदाता-रक्त को तरल बनाये रखता-तापक्रम को स्थिर रखता है।

20. Hipuric Acid ($C_4Ng\ Nox$) मूत्र द्वारा विषों को बाहर करता है।

21. Creatinin ($C_gH_gN_2O_2$) जन्तुघन है।

22. आठ मास की गाय के मूत्र में हार्मोन भी होते हैं। जो स्वस्थ्य वर्धक हैं।

23. स्वर्ण क्षार- Aurum Hydra Oxide (AUOH) जन्तुघ्न-विषनाशक, Highly Antibiotic-Antioxion है।

नोट— ये लाभ जब मिल सकते हैं, जब गायों को शुद्ध चारा मिले, खेतों में जहर ना डालें। खेतों व जंगल में चरती हों और पूरी तरह धूप सेवन करती हों, साफ पानी मिले-इनके रहने के स्थान साफ हों, खुरली (खोर) भी पुरी तरह साफ हो। भारत की गाय पर रोज 10 मिनट हाथ फेरने से नेत्रज्योति जल्दी नहीं घटती। गऊओं के सम्पर्क में रहने वालों का व्यवहार व बोली मधुर हो। इस प्रकार की गायों के दूधादि पदार्थों के गुण सभी वैज्ञानिक व बुद्धिजीवी भाई-बहन जानते हैं। अगर कमी है तो सिर्फ इच्छा शक्ति है।

नम्रनिवेदन— ये मेरा मामूली प्रयास मात्र है, जीवन में जो सीख पाये लोकहित लेखबद्ध कर दिया। मेरी भाषा खीचड़ी सुधार लें। अनुभवी मात्रा आदि (DOES) ठीक कर लें।

संग्रहकर्ता— देवीसिंह आ० चिकित्सक V.P.O. बुआना-लाखू (पानीपत) मो०- 9996316318, र० नं०-18377-1-H.R.

गोरक्षा आन्दोलन की स्मृति में

सेवा में श्री सम्पादक विरजानन्द दैवकरणि सादर नमस्ते:। सुधारक के अंक 3 नवम्बर 2017 पृष्ठ 9 पर ''गौरक्षा आन्दोलन के 51 वर्ष'' लेख पढ़ा, जिस से इस आन्दोलन की बातें मुझे स्मरण हो आई। जो आप तक भेजना उपयुक्त समझता हूँ।

स्वामी ओ३मानन्द जी 5 नवम्बर 1966 को जो 900 सत्यग्राहियों का जथा लेकर दिल्ली गये थे उसमें मैं भी शामिल था-उस समय मैं फोज से सेवानिवृत्त होकर कृषि कार्य करता था। जब स्वामी जी ने सन् 1957 में हिन्दी रक्षा आन्दोलन किया था तब मैं फोज में कार्यरत था, इस कारण मैं भाग न ले सका था। यह मुझे पश्चाताप था। जब हमें गौ रक्षा आन्दोलन करने की सूचना मिली तो मैंने इसमें शामिल होने का मन बनाया। उस समय गिहूं की बिजाई का कार्य चल रहा था उसे शीघ्रता से पूर्ण करने का प्रयत्न किया और 4 नवम्बर शाम को रोहतक दयानन्द मठ में पहुँच गया। ग्राम कलहावड़ निवासी डॉ० रघुबीर सिंह हमारे गांव में डाक्टरी की दुकान चलाता था। वह भी मेरे साथ गया था।

चार तारीख की शाम को स्वामी जी की अगवाई में दयानन्द मठ से शहर में जुलूस निकाला, नारे लगाते हुए भिवानी स्टेंड पर दुर्गा भवन पर पहुँचे। वहां पर विद्वानों के प्रवचन हुए। एक पौराणिक पंजाबी सज्जन ने कटाक्ष किया कि इन गौरक्षकों में ये कितनों ने गऊ पाल रखी हैं, स्वामी जी ने उसे लताड़ते हुए कहा कि ये सब किसान

हैं, इनमें से अधिकतर के पास गाये हैं और बैल तो सभी के पास हैं। फिर रात को सभी दयानन्द मठ पर जाकर सोये। स्वामी जी ने रेल में रिजरवेशन करा रखी थी। रेल के द्वारा देहली पहुच गये। स्टेशन से पैदल जुलूस के रूप में जाकर गृहमन्त्री श्री गुलजारीलाल नन्दा की कोठी पर जाकर गिरफतारी दी। हमें वहां से गिरफतार कर के तिहाड़ जेल भेज दिया गया।

7 नवम्बर को संसद भवन पर गोली चल गई और अनेक व्यक्ति मारे गये। बहुतों को गिरफतार किया गया। जेलों में स्थान नहीं रहे तो पुलिस ने हमें इस दृष्टि से शाम को जेल से जबरन बाहर निकाल दिया कि ये अपने घरों को चले जायेगें और आज गिरफतार हुओं को जेल में रख सकेंगे। परन्तु हम लोग अपने घरों को नहीं गये। गोली काण्ड के कारण सब बाजार व होटल बन्ध हो गये थे। भोजन का कोई प्रबन्ध न हो सका। समाज वाले हमारे लिये कहीं से गुड़ और भूंगड़े लाये।

हम खाकर सो गये। सवेरे उठे तो मन्दिर को चारों तरफ से घेर रखा था। पुलिस को पता चल गया था, एक जत्था इस मन्दिर में ठहरा है। पुलिस अधिकारियों ने स्वामी जी से बात करी और कहा हम आप को गिरफतार करेंगे। स्वामी जी ने कहा हम तो गिरफतारी देने के लिये ही आये हैं हमें तो शाम को जबरन जेल से निकाला था। पुलिस ने बसों में बैठाकर तिहाड़ जेल में ही भेज दिया। वहां पर हमें 21 दिन की सजा सुनाई गई।

मैंने तो खेती का कार्य सम्भालना था पर चला गया। किन्तु डॉ० रघुबीर ने कहा कि मैं तो फिर प्रदर्शन करूंगा। और वह वहीं पर कुछ लोगों के साथ बार बार प्रदर्शन करता रहा। पुलिस ने तंग आकर उस पर लाठी चार्ज कर दिया और उसके हाथ पांव तोड़ शरीर को जीवन भर के लिये बेकार कर दिया। डॉ० रघुबीर ने गौ रक्षा के लिये **अपने गृहाश्रम को बरबाद कर दिया, दुकानदारी खतम हो गई। दुःख से कहना पड़ता है कि आर्यसमाज ने उसकी कोई सुध नहीं ली।** फिर मैंने सुना था कि घर पर रहते हुये ही वानप्रस्थी के समान कपड़े रंग कर अपना समय व्यतीत कर रहा था। अब मुझे नहीं पता वह जीवित है या चल बसा। मुझे उसके बारे में अधिक पता नहीं है। आप से प्रार्थना है कि कलहावड़ ग्राम में जाकर उसकी पूरी जानकारी प्राप्त करके सुधारक में प्रकाशित करें जिसने गौ रक्षा के लिये अपने जीवन को अर्पण कर दिया। ऐसे त्यागी पर ध्यान देकर उसकी सुध लेनी चाहिये।

उस समय के राजनैतिक वातावरण को देखते हुए मेरी धारणा है कि स्वामी ओ३मानन्द व प्रोफेशर शेरसिंह जी ही हरियाणा के निर्माण कर्ता थे, मुख्य थे, उन ही की देन है हरियाणा प्रान्त। शेष तो उनके सहायक थे। मैं अनेक आर्यसमाज के आन्दोलनों, प्रदर्शनों में भाग लेता रहा हूँ। आचार्य बलदेव के प्रदर्शनों में रोहतक में गौ रक्षा के लिये भाग लिया था। अब तो आयु 86 वर्ष हो गई, स्वास्थ्य ठीक न होने से भाग नहीं ले सकता

लालचन्द्र आर्य मदाना खुर्दा।

गुरुकुल झज्जर में सार्वदेशिक आर्यवीरदल की हरयाणा शाखा का युवाचरित्र निर्माण शिविर सम्पन्न।

18 जून 2018 को गुरुकुल झज्जर में सार्वदेशिक आर्यवीरदल की ओर से युवा चरित्र निर्माण शिविर प्रारम्भ किया गया। इस शिविर का उद्घाटन झज्जर के एस.पी. श्री पंकज नैन ने किया तथा 51000 रुपये दान में भी दिये।

इस शिविर में 230 शिवरार्थियों ने भाग लिया। शिविर में गुरुकुल झज्जर के ब्रह्मचारियों से अतिरिक्त बालन्द, बराहणा, मकड़ौली, बादली, छारा, मांडोठी, कोयलपुर, अनाथालय रोहतक, भिवानी, बाढड़ा, मिलकपुर, खेड़ी आसरा, भैणीचन्द्रपाल, कादीपुर, गुरुकुल लाढौत, जींद, हांसी, उत्तराखण्ड, वृन्दावन, छत्तीसगढ, फरीदाबाद, पलवल इत्यादि स्थानों से भी युवकों ने भाग लेकर विविध प्रकार की शिक्षा प्राप्त की। जैसे- परेड, सर्वांग सुन्दर व्यायाम, सूर्यनमस्कार, भूमिनमस्कार, कराटे, लाठी, भाला, तलवार, छुरी, दण्ड बैठक, योगासन, मल्लखम्भ, बौद्धिक तथा सन्ध्या-यज्ञ आदि। आचार्य विजयपाल योगार्थी ने सभी शिविरार्थियों का उपनयन संस्कार सम्पन्न कराकर यज्ञोपवीत का महत्त्व समझाया।

वरिष्ठ शिक्षक अनिल शास्त्री बलियाना रूपेन्द्र झारखण्ड, ज्ञानेश महाराष्ट्र, कृपाल मध्यप्रदेश और बब्लू उत्तरप्रदेश'। शिविर समापन के समय गुरुकुल झज्जर के मन्त्री श्री राजवीर छिकारा ने भजन के माध्यम से श्रोताओं का मनोरंजन किया।

शिविर का समापन 24 जून 2018 को झज्जर की उपायुक्त श्रीमती सोनल गोयल के द्वारा सम्पन्न हुआ। आचार्य विजयपाल जी द्वारा गुरुकुल की आवश्यकता की मांग पर उपायुक्त ने अपने उद्बोधन में कहा—

गुरुकुल में आने का यह मेरा प्रथम अवसर है। यहां का अनुशासन देखकर मुझे अति प्रसन्नता हुई है। मैं भी डी.ए.वी. स्कूल में पढी हूं, वहां से प्राप्त संस्कार आज तक भी मुझे प्रोत्साहन देते हैं। मैं भी प्रतिदिन योग करती हूं। आज बाहर के छात्रों प्रशंसनीय नहीं है, उनमें श्रेष्ठ संस्कार प्रदान करने की आवश्यकता है। मुझसे जो भी सहायता बन सकेगी उसे मैं यथासम्भव देने का प्रयत्न करूंगी। मैंने रिलायन्स कम्पनी से सम्पर्क करके आपके गुरुकुल को दो लाख रुपये देने का वचन ले लिया है।

गुरुकुल के प्रधान चौ० पूर्णसिंह देशवाल, मन्त्री राजवीरसिंह छिकारा, डॉ० राजकुमार आचार्य तथा आचार्य विजयपाल जी ने उपायुक्त महोदया को गुरुकुल का साहित्य तथा विशेष औषधियां भेंट करके आदरपूर्वक विदा किया। विदाई के समय उपायुक्त जी ने कहा कि आज समयाभाव है, कभी समय निकालकर गुरुकुल का संग्रहालय भी देखने की इच्छा है। उपायुक्त ने शिविरार्थियों को प्रमाण पत्र भी प्रदान किये।

शिविर में भाग लेने वालो के रहन-सहन और भोजन आदि का प्रबन्ध आचार्य विजयपाल योगार्थी के निर्देशन में अशोक शास्त्री और महावीर शास्त्री ने उचित प्रकार से किया।

स्वामी देवव्रत जी से निवेदन है कि इन शिविरार्थियों का प्रतिमास सम्भालते रहें जिससे सम्पर्क बना रहे और जो कुछ इन्होंने सीखा है, उसे जीवन में धारण करने के लिए सदा सावधान और तत्पर रहें। बिना सम्भाले तो खेती भी सूख जाती है। अतः इस युवापीढ़ी से सतत सम्पर्क बनाये रखना अति आवश्यक है।

—विरजानन्द दैवकरणि

बन्दा वैरागी का बलिदान

लेखक—आनन्ददेव शास्त्री, पूर्व प्रवक्ता (संस्कृत) दिल्ली सरकार

उस समय दिल्ली पर औरंगजेब का राज था। पंजाब में गुरु गोबिन्द सिंह का सितारा चमक रहा था। सतलुज के किनारे बसे रोपड़ तक गुरु जी का अधिकार होगया था। तब औरंगजेब की आज्ञा से लाहौर के मुसलमान सूबेदार ने गुरु की सेनाओं पर आक्रमण किया। गुरु ने बड़ी वीरता के साथ सामना किया, परन्तु विरोधी सेनाएं अधिक थी उन्होंने गुरु को मालोवाल में घेर लिया। गुरु की माता गूजरी और जोरावर सिंह तथा फतहसिंह नाम के दो पुत्र घेरे में से निकल गये तथा उन्होंने सरहिन्द में एक गुरु के शिष्य के पास जाकर आश्रय लिया। फोजदार वजीरखां का दीवान कुलजस नाम का हिन्दू था। उसे इन तीनों का सुराग लग गया, उसने उन्हें वजीर खां के दरबार में पेश किया। स्त्री तथा बच्चों का मारना धर्मविरुद्ध मानकर वजीरखां ने उस समय तो उन्हें बन्दी बना लिया, लेकिन एक दिन बाद ही उसका मजहबी जनून जाग उठा। तब वजीर खां ने लड़कों से पूछा कि—

शेर के लड़कों ने जवाब दिया, हम सिक्खों को इकट्ठा करेंगे, उन्हें हथियार देकर तुमसे लडायेंगे और तुम्हें मार देंगे।

वजीरखां ने फिर कहा कि ''यदि तुम हार गये तो फिर कया करोगे ?''

लडकों ने फिर कहा कि हम फिर सेना इकट्ठी करेंगे फिर या तो तुम्हें मार देंगे या फिर मर जायेंगे।

इस पर फौजदार का क्रोध भडक उठा। फौजदार ने हुक्म दिया कि या तो तुम मुसलमान बन जाओ, अन्यथा तुम्हें प्राणदण्ड दिया जायेगा''।

लड़कों ने धर्म छोड़ना स्वीकार न किया। फौजदार की आज्ञा से उन्हें भयानक मृत्यु दण्ड दिया गया। उन्हें दीवार में चुनवा दिया गया। माता गूजरी पोतों की मृत्यु के धक्के को न सह सकी। इसी दु:ख में उसकी मृत्यु हो गई।

गुरु के बच्चों का बलिदान सिक्खों के हृदय में कील की तरह चुभ गया तथा पन्थ में इस बलिदान के कारण बदले की भावना पैदा हो गई।

मृत्यु से पूर्व जब गुरु गोबिन्द सिंह दक्षिण में नांदेड यात्रा पर गये तब एक माधवदास नामक वैरागी साधु से उनकी भेंट हई। यह साधु एक मठ का महन्त था तथा ठाठ बाट से रहता था, विद्वान् तथा प्रतिभाशाली भी था। शिष्य उसे पहुंचा हुआ सिद्ध मानते थे। गुरु तथा शिष्य परस्पर देखते ही एक दूसरे के प्रति आकर्षित हो गये। माधवदास सब आडम्बर छोड़कर गुरु का सच्चा शिष्य (बन्दा) बन गया। अर्थात् दास बन गया। यही बन्दा इतिहास में बन्दा वैरागी के नाम से विख्यात हुआ।

गुरु ने शिष्य को एक तलवार तथा पांच तीर तरकश में से निकाल कर दीक्षा के रूप में पांच शिक्षाएं भी दी। 1. जन्मभर ब्रह्मचारी रहना, 2. सत्य पर दृढ रहना, 3. अपने को खालसा का सेवक समझना, 4.अलग मत स्थापित करने की चेष्टा न करना, 5. विजय पर फूलकर अभिमान में उन्मत्त न होना। तब गुरु जी ने एक पत्र पंजाब के सिक्खों के नाम लिखकर दिया। जिसमें लिखा था कि वे संगठित होकर, बन्दा के झंडे के नीचे आकर शत्रुओं से लडें। इस पत्र का पंजाब के सिक्खों पर जादू सा प्रभाव हुआ तथा शीघ्र ही चालीस हजार सिक्ख बन्दा की सेना में एकत्रित हो गये। गुरु गाविन्द सिंह के पुत्रों के बलिदान ने उनके हृदय में

उबाल सा पैदाकर दिया तथा उनका सर्वप्रथम आक्रमण सरहिन्द पर हुआ। यही वह स्थान था जहां गुरु के पुत्र दीवार में चुने गये थे। तब फौजदार वजीरखां ने एक बडी सेना लेकर बन्दा का मुकाबला किया किन्तु मुगल सेना बुरी तरह पराजित हुई। विजयी सिक्ख सेना सर हिन्द में घुसी। बन्दा ने कत्लेआम तथा आग लगाने का आदेश दे दिया। तब बुरी तरह से मुसलमानों को मारा गया तथा शहर को जलाया गया। ऐसा तब कुछ प्रतिहिंसा की भावना से हुआ। बन्दा की सेनाएं पूरे पंजाब में फैल गई तथा मुसलमानों का बुरी तरह नाश हुआ। इस प्रकार बन्दा करनाल तक पहुंच गया। इसी प्रकार जब बन्दा की सेना ने लाहौर पर आक्रमण किया तब वहां के फौजदार ने उनका मुकाबला तो किया, किन्तु सिक्खों का लाहौर पर अधिकार हो गया।

इस समय दिल्ली की गद्दी पर औरंगजेब का लडका बहादुरशाह बैठा था और वह दक्षिण में युद्धों में उलझा हुआ था। उसके पीछे से उदयपुर, जोधपुर तथा जयपुर के राज्यों ने विद्रोह कर दिया था। उन्हें दबाने बादशाह राजस्थान की तरफ चला। बादशाह उन्हें कठोर दण्ड देना चाहता था, परन्तु तभी उसे पंजाब के मुसलमानों का आर्तनाद सुनाई दिया। अतः राजपूतों को दण्ड देने का विचार त्याग उसने राजपूतों से चटपट सन्धि की तथा नारनौल से होता हुआ सीधा पंजाब पहुंच गया तथा सब तरफ की मुगलसेना पंजाब में ही इकट्ठी करली। मुगल प्रशासकों की ढील के कारण सिक्ख लापरवाह होकर पूरे पंजाब में बिखरे हुये थे। उन्हें यह अन्देशा भी नहीं था कि मुगल सेनाएं इतनी जल्दी राजस्थान से पंजाब आ जायेंगी बडी-बडी मुसलमान सेनाएं सिक्खों पर टूट पडी तथा सिक्ख पराजित हुए। मुसलमानों ने सरहिन्द का भयंकर बदला लिया। जो भी सिक्ख सैनिक या सिक्ख किसान मिलता उसकी चोटी को रस्सी बनाकर पेडों पर लटका दिया जाता। जब बन्दा को इस स्थिति का पता चला तब बन्दा ने स्थिति को शीघ्र संभाला तथा मैदानी लडाई व्यर्थ समझ साठौरा के पास एक पहाड़ी दुर्ग में आश्रय लिया। किले पर तोप चढा दी गई तथा बन्दूकचियों का पहरा लगा दिया गया। दुर्ग अजेय समझा जाता था। कुछ बन्दा का आतंक भी बहुत अधिक था, अतः पहले तो मुसलमानों की उसमें हाथ डालने की हिम्मत ही नहीं हुई। खूब तैय्यारी के बाद दिसम्बर 1810 में मुगल सेनाओं ने ''लोहगढ'' पर आक्रमण किया। कई दिन की लडाई के बाद किला जीता जा सका। वहां के निवासी बन्दी बनाकर बादशाह के सामने लाये गये। किला तो जीत लिया किन्तु बन्दा वहां से साधु के वेश में बच निकला। इस पर बादशाह वहां शिकार खेलने में मस्त हो गया तथा उधर बन्दा ने शीघ्र ही सैन्य संगठन करके गुरुदासपुर के किले पर आक्रमण कर वहां के किलेदार तथा उसके भतीजे को मारडाला और लाहौर की तरफ बढने लगा। जब बादशाह को यह समाचार मिला, तब वह तेजी से लाहौर की तरफ चला और सात मास ही बिताये तथा उसकी वहीं मृत्यु हो गई।

बादशाह की मृत्यु के साथ ही गद्दी के लिये उठा पटक शुरु हो गई और गद्दी पर बादशाह का भतीजा फर्रूखसीयर आसीन हुआ। यह स्वयं को औरंगजेब का अवतार समझता था। बन्दा गुरु जी के आदेश से सिक्खों का नेता तो बन गया था, परन्तु वह सिक्खों के नियमों का पालन नहीं करता था अतः सिक्ख उसके प्रति भेदभाव रखने लगे। आपत्ति के समय ही अधिक आपत्तियां आती हैं। सिक्ख उसका साथ छोडने लगे। दूसरा एक कारण यह भी था कि मुसलमानों ने गुरु जी की विधवा को बहकाकर उससे बन्दा का साथ छोडने के लिये पत्र

लिखवा लिया यह भी सिक्खों का बन्दा से अलग होने का कारण बना। तब बन्दा ने अन्य हिन्दुओं को सेना में भर्ती करना प्रारम्भ किया। इस प्रकार बन्दा अकेला पड गया और उसका सामना फर्रूखसीयर की बडी सेना से हुआ। फर्रूखसीयर ने लाहौर के सूबेदार को एक बडी सेना देकर बन्दा को हराने के लिये भेजा। अब लडाई नहीं केवल बन्दा का शिकार करना था। बन्दा आगे आगे भागा जा रहा था तथा मुगलसेना पीछे-पीछे भाग रही थी। बन्दा गुरुदासपुर के किले में घिर गया। घेरा कठोर था तथा किसी प्रकार की खाद्य सामग्री अन्दर नहीं जा सकती थी। सिपाही भूखे मरने लगे। कुछ समय तक तो घोड़े गदहों का मांस खाकर काम चलाया गया, परन्तु कब तक। किले में 10 हजार सैनिक घिरे थे। जिसमें से 8 हजार सैनिक भूख से मर गये। शरीर भूख से सूखकर कांटा हो चुके थे। अन्त में सभी मर मिटने के लिये तलवार लेकर बाहर निकले। कुछ मर गये तथा कुछ पकडे गये। बन्दा भी पकडा गया। मुसलमानों ने बन्दा के प्रति प्रतिशोध की भावना भडक उठी। उन्हें सरहिन्द का बदला याद था। बन्दा का एक लोहे के पहियेदार पिंजडे में बन्द कर दिया गया। मरे हुए दो हजार सिक्खों के सिरों को भाले पर टांगे हुए सिपाही उसके आगे पीछे चल रहे थे। सात सौ से भी अधिक सिक्ख कैदी साथ थे। ऐसा बीभत्स दृश्य बनाकर कैदी दिल्ली लाये गये। बहुत से केदियों के शरीर भेड़ की खाल से ढककर उन्हें ऊटों तथा गदहों पर बिठाकर दिल्ली शहर में घुमाया गया। बन्दा का मुंह काला कर दिया गया। सिर पर ऊंची कलन्दर वाली टोपी पहना दी गई। इस भेष में हाथी पर बैठाकर उसकी सवारी निकाली गई। बन्दा तथा उसके साथियों ने अपमान को बडे धैर्य से सहन किया। इनमें से एक भी व्यक्ति पीछे नहीं हटा। सब एक दूसरे से पहले पन्थ के लिये बलिदान देने के लिये तैय्यार थे।

आठवें दिन अभियोग और न्याय का रोमांचकारी नाटक रचा गया। बन्दा को जजों के सामने पिंजरें में से जंगली जानवर की तरह घसीटकर बाहर निकाला गया। फिर उसे जबरदस्ती सुनहरे काम वाली सरकारी पोशाक पहनाई गई तथा उसके चारों ओर सिक्ख सैनिकों के सिरों से सजे हुए भालों की प्रदर्शनी की गई। जल्लाद नंगी तलवार हाथ में लिये सिर उडाने के लिये बन्दा के पीछे खडा था। दरबारी न्यायाधीश ने पूछा कि ''तुमने ऐसे विद्वान् और समझदार होते हुए मुसलमानों पर अमानुषिक अत्याचार क्यों किये ? उसने उत्तर दिया मैं दुष्टों को दण्ड देने के लिये ईश्वर की ओर से कालरूप में अवतीर्ण हुआ था परन्तु अब मेरे अपराधों का दण्ड देने की शक्ति दूसरों को दे दी गई है। गुरुदासपुर से लाये गये सब कैदी बडी वीरता से मृत्यु का सामना कर रहे थे। सरकार की ओर से कहा गया था, जो बन्दी इस्लाम स्वीकार कर लेगा उसे छोड दिया जायेगा। परन्तु एक भी बन्दी मुसलमान बनने को तैय्यार नहीं हआ। वे लोग हत्या को मुक्ति कहते थे। जब जल्लाद मारने के लिये आगे बढता तो बन्दी चिल्लाता पहले मुझे मारो। शहीद होने के लिये वे इतने उतावले थे।

एक नौजवान सिक्ख की मां, अपने बेटे भी प्राणरक्षा के लिये, कुतबुल मुल्क तक पहुंच गई। उसने वजीर से कहा—''मेरा बेटा सिक्ख नहीं है, वह तो गुरु के यहां बन्दी था। मैं विधवा हूं, मेरा दूसरा कोई सहारा नहीं है''। वजीर को दया आ गई, उसने लडके की रिहाई के लिये आज्ञा दे दी। मां उस आज्ञापत्र को लेकर कोतवाल के पास पहुंची। कोतवाल ने आज्ञापत्र पढा तथा युवक को जेल से

बाहर खडा करके, लडके से कहा—''कि तुम स्वाधीन हो। तब युवक ने अपने धार्मिक उत्साह का अपमान समझा। उसने कोतवाल से कहा कि ''मैं इस औरत को नहीं जानता, यह मुझसे क्या चाहती है। मैं गुरु का सच्चा शिष्य हूं। मैं गुरु के लिये अपना जीवन देने के लिए तैय्यार हूं। जो दण्ड गुरु को मिलेगा वही मैं भी लूंगा। युवक को फिर जेल में डाल दिया गया। जब उसका वध किया गया उसके चेहरे पर वही निर्भयता विराजमान थी।

अन्त में गुरु की बारी आई। पहले गुरु को भद्दे वेश में हाथी पर चढाकर घुमाया गया। फिर कुतुबमीनार के पास यह हत्याकाण्ड किया गया। गुरु को जमीन पर बिठाकर उसके छोटे पुत्र को लाकर उसकी गोदी में डाल दिया गया कि अपने पुत्र को मार डालो। गुरु ने इन्कार कर दिया। तब हत्यारे ने एक लम्बे छुरे से उस नन्हें बच्चे का पेट चीर, उसमें से जिगर निकाल जबरदस्ती गुरु के मुंह में ठूस दिया। इस पैशाचिक कृत्य के बाद बन्दा की अपनी बारी आई। पहले छुरे की नोक से उसकी आंख निकाली गई। फिर उसका बांयां पैर काट दिया गया। उसके बाद दोनों हाथ शरीर से अलग किये गये। अन्त में शरीर के टुकडे करके फेंक दिये गये। बन्दा की पत्नी को जबरदस्ती मुसलमानी बनाकर एक राजवंश की बेगम को गुलाम के तोर पर दे दी गई। जिस फरुखसीयर बादशाह के निर्देश पर ये अत्याचार किया गया था कुछ समय बाद ही राज्य प्राप्ति के इच्छुक अन्य मुसलमानों ने गद्दी से कुत्ते की तरह घसीटकर जेल में डाल दिया तथा खाना–पानी के अभाव में तडफ तडफकर उसने प्राण त्यागे। ऐसे बलिदानियों को शतशः नमन।

सम्पर्क सूत्र

111/19 आर्य नगर, झज्जर

मो० 9996227377

श्रावणी पर्व का निमन्त्रण

26 अगस्त रविवार 2018 ई०

महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर में प्रतिवर्ष श्रावणीपर्व धार्मिक समारोह पूर्वक मनाया जाता है। इस पर्व के उपलक्ष्य में वेद और वैदिक ग्रन्थों के स्वाध्याय के लिए श्रोताओं को प्रेरित किया जाता है। जो व्यक्ति गुरु परम्परा से वेदादि शास्त्रों का अध्ययन करने का अवसर प्राप्त नहीं कर पाया हो, उसे श्रावणी के पर्व पर वैदादि ग्रन्थ उपलब्ध कराकर स्वाध्यायशील बनने के लिए उत्साहित करते हैं। पुराने यज्ञोपवीत के स्थान पर नूतन यज्ञोपवीत धारण करने की परम्परा भी इसी अवसर पर प्रचलित है।

स्वाध्याय के लिए प्रेरणा देने के साथ–साथ दैनिक यज्ञ करने तथा दुर्व्यसन त्याग करने के लिए भी प्रतिज्ञाएं की जाती हैं। यदि व्यक्ति प्रतिवर्ष एक दुर्गुण छोडने और एक सद्गुण धारण करने का नियम कर लेता है तो पूरे जीवन में देवत्व को प्राप्त कर सकता है। साथ ही अपनी सन्तति को भी देवकोटि में प्रविष्ट कराने का मार्ग प्रशस्त कर लेता है। वेद का आदेश है **मनुर्भव जनया दैवयं जनम्।** स्वयं मनस्वी बनो और अगली पीढी को देव बनने की प्रेरणा करो।

गुरुकुल झज्जर से संबद्ध तथा इसके प्रति आस्था रखने वाले सज्जनों का यह सौभाग्य है कि आज के इस दूषित वातावरण में भी आप को जीवन को उत्तम बनाने के लिए अवसर मिलता रहता है। अतः इस अवसर पर आप अपने परिवार सहित पधार कर धर्मोपदेश सुनें और तदनुसार आचरण करके जीवन को सफल बनायें।

— निवेदक —

आचार्य	प्रधान	मन्त्री
विजयपाल योगार्थी	चौ० पूर्णसिंह देशवाल	राजवीरसिंह छिकारा
9416055044		

सत्यार्थप्रकाश (द्वितीय संस्करण) उदयपुर में नहीं लिखा गया था

—विरजानन्द दैवकरणि

नवलखा महल उदयपुर स्थित 'सत्यार्थप्रकाशा न्यास' के पदाधिकारियों द्वारा विगत लगभग पन्द्रह वर्षों से यह मिथ्या प्रचार किया जा रहा है कि इस महल में बैठकर महर्षि स्वामी दयानन्द जी महाराज ने सत्यार्थप्रकाश का द्वितीय संस्करण लिखा था। अनेक घटनाओं और प्रमाणों से यह स्पष्ट सिद्ध है कि उदयपुर पहुंचने से बहुत पहले महर्षि जी सत्यार्थप्रकाश का द्वितीय संस्करण लिखकर तैयार करवा चुके थे तथा उसकी 'मुद्रण प्रति' भी तैयार हो चुकी थी। केवल प्रेस में भेजने का अवसर नहीं आया था। उदयपुर में पधारने पर उन्हें यह अवसर मिला था। इतिहास को विकृत करके फैलाई गई यह भ्रान्ति कभी 'सत्यार्थप्रकाश' की रचना पर भी अविश्वास पैदा कर सकती है क्योंकि सैंकड़ों वर्षों बाद जब तथ्य ढूंढे जायेंगे तो उनमें संदेह उत्पन्न होगा। अत: सत्यार्थप्रकाश के तथा ऋषि के हित में हमें समय रहते भ्रांति को दूर कर लेना चाहिए। सत्यार्थप्रकाश और ऋषि-हित को देखते हुए हमें इस विषय में कोई दुराग्रह भी नहीं करना चाहिए। सभी विद्वान् और जीवनचरित लेखक इस विषय में एकमत हैं कि सत्यार्थप्रकाश उदयपुर में नहीं लिखवाया गया था। इस सत्य को मान लेना चाहिए। इस विषयक प्रमाण आगे द्रष्टव्य हैं—

1. महर्षि दयानन्द सरस्वती की जीवनी के लेखक पं. लेखराम आर्यपथिक लिखते हैं-

''स्वामी जी 11 अगस्त 1882 के दिन उदयपुर पहुंचकर नौलखा बाग के महलों में जिसको 'सज्जननिवास' कहते हैं, उतारे गये।

दैनिक कार्यक्रम ..... उपासना और समाधि के पश्चात् डेरे पर जाकर हाथ मुंह धोकर दूध ब्राह्मी पीते थे, फिर वेदभाष्य किया करते थे। ... स्वामी जी ने कहा कि मैं इन (दर्शनों) की टीका करना आवश्यक जानता हूँ, वेदभाष्य के पश्चात् इसका प्रबन्ध करूँगा''

इस सारे प्रकरण में यह चर्चा कहीं नहीं है कि महर्षि जी ने नवलखा महल में बैठकर सत्यार्थप्रकाश लिखा था। हाँ, वहाँ रहते हुए अन्य स्थानों की भाँति ऋग्वेद और यजुर्वेद का भाष्य अवश्य करते रहते थे।

2. श्रीस्वामी जी चित्तौड़गढ़ पहुंच मुंशी समर्थदान को पत्र के द्वारा अपना उदयपुर निवास का वृत्तान्त इस प्रकाश लिखते हैं—

''... अब उदयपुर का वृत्तान्त लिखते हैं। जब से उदयपुर में पहुंचे, उस दिन से बहुत आनन्दित रहे और नित्य प्रति श्रीमान् महाशयों की बढ़ती हो गई। मनुस्मृति के सप्तम, अष्टम, नवम पर्यन्त राजधर्म सब यथातथ्य पढ़ लिये। अन्य बहुत से भारतस्थ विदुरप्रजागर तथा 6 शास्त्रों के मुख्य-मुख्य विषय और चलते वक्त थोड़ा सा व्याकरण का विषय और अन्वय की रीति भी पढ़ली''

4 मार्च 1883 स्वामी दयानन्द

चित्तौड़गढ़

3. इसी विषयक एक पत्र बाबू दुर्गाप्रसाद फर्रूखाबाद के पास लिखा-

''नित्यप्रति श्रीमान् महाराणा जी की ओर से सेवा उत्तम रीति से होती रही। किसी दिन को छोड़ सब दिन तीन चार व पांच घंटे तक मुझसे मिलकर प्रेमपूर्वक सत्संग किया करते थे। ... और 1200/- कल्दार वेदभाष्य के सहायतार्थ... प्रदान किये।''

4. इन पत्रों में भी सत्यार्थप्रकाश विषयक चर्चा कहीं नहीं है। पं. घासीराम जी एवं देवेन्द्र बाबू द्वारा लिखित एवं संकलित महर्षि जी के जीवन चरित में भी उपर्युक्त बातें दोहरा कर यह अधिक लिखा है-

''महाराज 12 बजे तक वेदभाष्य लिखाने में व्यस्त रहते हैं, 12 बजे उठकर स्नान, भोजन करने पश्चात् लेटते और दो-चार करवटें लेकर उठ बैठते और चिट्ठियों के उत्तर लिखाते और प्रूफ देखते। चार बजे चबूतरे पर फर्श बिछ जाता और लोग आने लगते। थोड़ी देर में ही भीड़ लग जाती। प्रायः सभी धार्मिक सम्प्रदायों के मनुष्य आते और महाराज से प्रश्नोत्तर करते थे। व्याख्यान भी इसी चबूतरे पर होते थे। महाराणा भी प्रायः व्याख्यानों में उपस्थित होते थे दीपक जलने के समय तक सभा रहती थी।

5. पं. लेखराम जी ने मोहनचन्द्रिका पत्रिका के आधार पर महर्षि के जीवन में लिखा है कि वे 11 अगस्त सन् 1882 से 1 मार्च 1883 तक उदयपुर में रहे। इस पत्रिका के आधार पर पं. लेखराम जी ने 13 उद्धरण दिये हैं जिनमें महर्षि द्वारा उदयपुर निवास के समय किये गये विशेष कार्यों की चर्चा है।

उदयपुर निवास के समय महर्षि जी की यही दिनचर्या थी। इस प्रकरण में सत्थार्थप्रकाश लेखन की कहीं चर्चा नहीं है।

6. सत्यार्थप्रकाश का लेखन नौलखा महल, उदयपुर में हुआ यह चर्चा कहां से चली, इस पर विचार किया जाता है। पं. युधिष्ठिर जी मीमांसक ने 'ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों का इतिहास' नामक पुस्तक के पृष्ठ 38 पर लिखा है। (पं. जी को प्रमाण रूप में उद्धृत करके आर्यजनों को पं. जी का यह शोध-तथ्य भी प्रमाणित रूप में स्वीकार करना चाहिए)-

सत्यार्थप्रकाश के संशोधन का काल संशोधित सत्यार्थप्रकाश की भूमिका के अन्त में इस प्रकार लिखा है-''स्थान महाराणा जी का उदयपुर भाद्रपद शुक्लपक्ष संवत् 1939। सत्यार्थपकाश के संशोधन की समाप्ति इससे भी पूर्व हो गई थी।'' अर्थात् उदयपुर पहुँचने से 14 मास पूर्व सत्यार्थप्रकाश लिख कर तैयार किया जा चुका था।

भाद्रपद वदि 1 मंगलवार संवत् 1939 (29 अगस्त 1882) के ऋषि के पत्र से विदित होता है कि उन्होंने भाद्रपद वदि 1 को भूमिका और प्रथम समुल्लास की प्रेस कापी एक साथ प्रेस में भेजी थी। उनका लेख इस प्रकार है-

आज सत्यार्थप्रकाश को शुद्ध करके 5 पृष्ठ भूमिका के और 32 पृष्ठ प्रथम समुल्लास से भेजे हैं, पहुंचेंगे। (यहां भूमिका से तीसरे समुल्लास के 'अकामस्य क्रिया काचित्' श्लोक तक 32 पृष्ठ थे।)

महर्षि के इस पत्र से स्पष्ट है कि उदयपुर पधारने के लगभग 18 दिन पश्चात् उन्होंने पूर्व लिखित सत्यार्थप्रकाश के द्वितीय संस्करण को छापने के लिये प्रेस में भेजना आरम्भ किया था न कि द्वितीय संस्करण का लेखन।

यदि द्वितीय संस्करण का लेखन उदयपुर महल में माना जाये तो यह सम्भव ही नहीं, क्योंकि मूल प्रति के 805 पृष्ठ और प्रेसप्रति के 490 पृष्ठ 18 दिनों में किसी तरह नहीं लिखे जा सकते, दिनचर्या में वेदभाष्य करना, महाराणा को पढ़ाना, पत्रों का उत्तर देना, शंका समाधान करना, व्याख्यान देना और अपनी स्वयं की दिनचर्या भी करनी होती थी।

7. संवत् 1936 (सन् 1879) में प्रकाशित 'वर्णोच्चारण-शिक्षा' के अन्त में सत्यार्थप्रकाश छापने की सूचना छापी है। इसी भांति संवत् 1938 (सन्

1881) में प्रकाशित 'सन्धिविषय' के अन्त में सत्यार्थप्रकाश छापने की सूचना प्रकाशित है। यदि सत्यार्थप्रकाश उदयपुर में लिखा माना जाये तो उक्त दोनों सूचनायें निरर्थक हो जाती हैं, क्योंकि उदयपुर न्यास के अनुसार तो सवत् 1939 से पूर्व तक सत्यार्थ प्रकाश लिखा ही नहीं गया था।

इससे बहुत स्पष्टता से सिद्ध होता है कि सत्यार्थप्रकाश ऋषि जी के उदयपुर में आने से बहुत पहले ही अर्थात् सन् 1879 में लिखकर तैयार हो चुका था, केवल प्रकाशन करने का सुयोग नहीं हो पा रहा था, क्योंकि ऋग्वेद और यजुर्वेद भाष्य प्रतिमास अंक के रूप में छापे जा रहे थे और मुंशी समर्थदान जी वेदभाष्य छापने के साथ-साथ 'प्रयाग-समाचार' आदि साप्ताहिक पत्रों का प्रकाशन तथा अन्य भी बाहर के प्रकाशन का काम करते थे। इसी का परिणाम था कि 29 अगस्त 1882 से 19 सितम्बर 1882 तक केवल सत्यार्थप्रकाश की भूमिका और कुछ पृष्ठ ही छप पाये थे।

8. सत्यार्थप्रकाश द्वितीय संस्करण की मूलप्रति की भूमिका के अन्त में 'स्थान महाराणा जी का उदयपुर' आदि कुछ नहीं लिखा था। जब उसकी मुद्रणप्रति मुशी समर्थदान जी के पास डाक से प्रयाग में भेजी गई तो उस दूसरी प्रति में भी स्थान आदि का निर्देश नहीं था।

जब सत्यार्थप्रकाश की भूमिका और उससे आगे के 32 पृष्ठ मुंशी समर्थदान जी के पास प्रयाग में पहुंचे तो उन्होंने उसके अन्त में अपने हाथ से "(स्वामी) दयानन्द सरस्वती, स्थान महाराणा जी का उदयपुर भाद्रपद... संवत् 1939" लिख दिया।

इस प्रकाशित पंक्ति को देखकर ही लोगों ने भ्रान्तिवश अथवा जान-बूझकर स्थानविशेष को महिमा मण्डित करने के लिए इस असत्य को प्रचारित कर दिया कि सत्यार्थप्रकाश के प्रारम्भ का समय अंकित है।

9. एक और तथ्य देखिये- प्रकाशित सत्यार्थप्रकाश की भूमिका में अन्त में "भाद्रपद शुक्ल पक्ष" लिखा है, जबकि भूमिका "भाद्रपद बदि"? को छपने भेजी गई है। यदि तिथि छापनी थी तो जिस तिथि को भूमिका छपने भेजी थी, वही तिथि छापनी चाहिए थी। 15 दिन बाद का शुक्लपक्ष बिना तिथि के ही छाप देना भी सन्देह का कारण है। पुन: मुंशी समर्थदान ने अपने निवेदन के अन्त में "आश्विन कृष्ण पक्ष सवत् 1939" लिखा है। यह भी अशुद्ध है क्योंकि यह निवदेन सन् 1884 में पूरा सत्यार्थप्रकाश छपने के बाद लिखा गया है। मुंशी जी ने ग्रंथ छपने के बाद इसमें लिखा है- "छापते समय ग्रन्थ के शोधने और विरामादि चिन्हों के देने में जहां तक बना, बहुत ध्यान दिया परन्तु शीघ्रता के कारण कहीं भूल रह गई हो तो पाठकगण ठीक कर लें।"

10. श्रावण 1939 में उदयपुर पहुंचने से पूर्व संवत् 1936 से 1939 तक महर्षि जी क्रमश: निम्नलिखित स्थानों पर उपदेश करते रहे थे-

हरद्वार, देहरादून, सहारनपुर, मेरठ, अलीगढ़, छलेसर, मुरादाबाद, बदायूं, बरेली, शाहजहांपुर, लखनऊ, कानपुर, दानापुर, काशी, फर्रूखाबाद, मैनपुरी, मेरठ, मुज्जफरनगर, आगरा, भरतपुर, जयपुर, अजमेर, मसूदा, चितौड़, इन्दौर, बम्बई, खण्डुआ, जावरा (इसके बाद उदयपुर पहुंचे)

इस भ्रमण काल में महर्षि जी के साथ लेखक भी रहते थे। उसी समय सत्यार्थप्रकाश का पुनर्लेखन और वेदभाष्य आदि कार्य साथ-साथ हो रहे थे, और वेदभाष्य छप भी रहे थे तथा सत्यार्थप्रकाश छापने की योजना भी थी। इसीलिए संवत् 1936 और 1938 में सत्यार्थप्रकाश के प्रकाशन की सूचना

'वर्णोच्चारण शिक्षा' और 'सन्धि विषय' के अन्त में छप चुकी थी। उदयपुर आकर केवल प्रकाशित करने के लिए प्रेस में भेजना प्रारम्भ किया था जो कि सन् 1884 में प्रकाशित होकर सर्वसुलभ हुआ।

11. सत्यार्थप्रकाश के प्रथम संस्करण में लिखित जैनमत के सिद्धान्तों का खण्डन पढ़कर लाला ठाकुरदास ने न्यायालय में महर्षि दयानन्द जी के विरुद्ध अभियोग चलाया था। इसका उत्तर देने के लिए महर्षि जी की ओर से श्री पेन और श्री गिलबर्ट ने 12 जून 1882 को बम्बई से एक पत्र ठाकुरदास के पास भेजा था। उसमें यह लिखा था कि 'यदि आप स्वामी दयानन्द जी के सामने उनकी बातों को असत्य सिद्ध कर दें तो उसमें आप द्वारा आपत्तिजनक माने गये स्थलों को सत्यार्थप्रकाश से निकाल दिया जायेगा, क्योंकि राजा जयकृष्णदास जी सत्यार्थप्रकाश का द्वितीय संस्करण छापना चाहते हैं।

इस पत्र से सिद्ध है कि उदपयपुर पहुँचने से पूर्व 12 जून 1882 से पहले महर्षि दयानन्द जी सत्यार्थप्रकाश का द्वितीय संस्करण तैयार कर चुके थे।

12. 3 जुलाई 1882 को महाराधिराज नाहरसिंह वर्मा को महर्षि जी इन्दौर से पत्र लिखते हैं- 'वेदभाष्य के कार्य रहने से श्रीमन्तों के पास पत्र न भेज सका।' इस पत्र से ज्ञात है कि उन दिनों सबसे प्रमुख कार्य वेदभाष्य करना था। सत्यार्थप्रकाश के लेखन के कारण किसी अन्य कार्य में बाधा होने की चर्चा कहीं नहीं हुई है।

13. इन्दौर के बाद जावरा और चितौडगढ़ होते हुए 11 अगस्त 1882 को स्वामीजी ने उदयपुर पहुंचने के छह दिन पश्चात् 17 अगस्त 1882 को दुर्गाप्रसाद जी को पत्र लिखा-'जब हमने वेदभाष्य के काम को छोड़ प्रमाण सहित उत्तर रजिस्ट्री कराके भेज दिये।'

पाठकों को ज्ञात हो कि मुरादाबाद के लाला जगन्नाथदास ने एक प्रश्नोत्तरी लिखी थी, उसका उत्तर देना अत्यावश्यक जानकर महर्षि जी ने वेदभाष्य जैसे आवश्यक कार्य को छोड़ कर उस पश्नोत्तरी का उत्तर लिखा था। यदि उदयपुर में वे सत्यार्थप्रकाश लिख रहे होते तो वेदभाष्य के साथ सत्यार्थप्रकाश की चर्चा भी अवश्य करते। क्योंकि यह ग्रन्थ भी अतिमहत्त्वपूर्ण है। इसके लेखन-कार्य में भी बाधा आना उन्हें कदापि स्वीकार्य नहीं था।

14. उदयपुर पहुंचने के 18 दिन बाद 29 अगस्त 1882 को सत्यार्थप्रकाश की भूमिका के 5 पृष्ठ और प्रथम समुल्लास से तृतीय समुल्लास तक के 32 पृष्ठ छपने के लिए डाक द्वारा मुंशी समर्थान जी के पास प्रयाग में भेजे थे।

पुस्तक की भूमिका पूरा ग्रन्थ लिखे जाने के पश्चात् लिखी जाती है। सत्यार्थप्रकाश की भूमिका में महर्षि जी लिखते हैं... 'यह ग्रन्थ 14 समुल्लास अर्थात् चौदह विभागों में रचित हुआ है। ... ऐसी बात को चित्त में धर के इस ग्रन्थ को रचा है। आर्यावर्त के विषय में विशेषकर ग्यारहवें समुल्लास तक लिखा है। 12वें समुल्लास में चारवाक का मत लिखा है... 13 वें समुल्लास में ईसाइयों का मत लिखा है। 14 वें समुल्लास में मुसलमानों के मत के विषय में लिखा है...।'

इन वाक्य से सिद्ध है कि भूमिका लिखने से पूर्व सारा ग्रन्थ लिखा जा चुका था। यदि नौलखा महल में बैठकर सत्यार्थप्रकाश की भूमिका भी लिखी गई मानें तो भी उनकी मान्यता सिद्ध नहीं होती, क्योंकि उदयपुर पधारने के 18 दिन बाद में ही दोनों पाण्डुलिपियों के 805+490=1295 पृष्ठ लिखकर तैयार नहीं किये जा सकते थे, जबकि वेदभाष्य के साथ-साथ उपदेश, शंका-समाधान,

पत्रव्यवहार, प्रूफसंशोधन, अपनी दिनचर्या आदि का कार्य चलता रहता था ? ऐसा संभव नहीं।

15. 8 सितम्बर 1882 को महर्षि जी ने समर्थदान के पास पत्र लिखा, उसमें आदेश—

''अब सत्यार्थप्रकाश छपेगा। इसलिए भाषा के अक्षर अधिक मंगवाना चाहिए। सत्यार्थप्रकाश में संस्कृत पाठ के अक्षर भाषा से कुछ उन्नीस-बीस होने चाहिएं।'' इसका अर्थ है कि तब तक ग्रन्थ पूरा तैयार था।

16. 9 सितम्बर 1882 को समर्थदान को महर्षि जी पत्र में पुन: लिखते हैं-

''सत्यार्थप्रकाश अच्छे कागज़ और टेप में छपवाना। जो इन अक्षरों से पुस्तक न बिगड़े तो छापने का आरम्भ कर दो।''

''थोड़े दिनों के पश्चात् और सत्यार्थप्रकाश के पन्ने शुद्ध करके भेज देंगे। तुम सत्यार्थप्रकाश के छपने का प्रारम्भ कर दो।''

18. 2 अक्टूबर 1882 को समर्थदान को पत्र में पुन: महर्षि जी ने लिखा-

''और सत्यार्थप्रकाश के छापने में हमारा तो यही विचार है कि नवीन टेप में छपे। जो आरम्भ न किया होय तो पीछे छापना। और आरम्भ कर दिया हो तो उसमें संस्कृत के मूलवचन कुछ बड़े में और भाषा छोटे में।''

इन मूल पत्रों से यह सिद्ध है कि सत्यार्थप्रकाश लिखा तो पहले था किन्तु उदयपुर पहुंचने के लगभग दो मास पश्चात् तक भी वह छपना प्रारम्भ नहीं हो सका था। इसमें विशेष कारण यह था कि स्वामी जी चाहते थे कि नये टाइम आने के बाद ही सत्यार्थप्रकाश छापना आरम्भ किया जाये।

19. 7 अक्टूबर 1882 को मुंशी समर्थदान ने सत्यार्थप्रकाश की मुद्रणप्रति (अगले पृष्ठों की) भेजने के लिए भी स्वामी जी पत्र लिखा तो स्वामी जी ने 15 अक्टूबर 1882 को पत्रोतर दिया—

''**... जो एक फारम के अनुमान नित्यप्रति शोधकर तुम्हारे पास भेजा जाये तो यहां का सब काम अर्थात् वेदभाष्यादि का बनाना छूट जाये।** प्रत्युत इस काम के लिए महाराणा आदि जी से भी कह दिया कि सन्ध्या समय आया करें... कल तुम्हारे पास 33 पृष्ठों से सत्यार्थप्रकाश के पन्ने... भजेंगे। ... तुम हमको यह लिखना कि सत्यार्थप्रकाश के कितने पृष्ठ एक फारम में लगते हैं। सो ब्योरेवार से जब लिख भेजोगे, तब हम यहां से अनुमान करके लिख देंगे कि सब सत्यार्थप्रकाश के इतने फारम होंगे।''

इस पत्र से अत्यन्त स्पष्ट सिद्ध है कि 15 अक्टूबर 1882 ते (उदयपुर पधारने के 1 मास पश्चात् तक) सत्यार्थप्रकाश द्वितीय संस्करण की मूलप्रति 805 पृष्ठ) और मुद्रणप्रति (490 पृष्ठ) पूरी तैयार हो चुकी थी। इसी के आधार पर मुंशी समर्थदान को यह लिखा था कि सत्यार्थप्रकाश के कुल फारम इतने बन जायेंगे।

इससे यह भी ज्ञान होता है कि वेदभाष्य कार्य उन दिनों सबसे प्रमुख था। और सत्यार्थप्रकाश की प्रेसकापी के पन्ने भी यथावकाश तैयार किये जाते थे। 'शोध करके' का अभिप्राय प्रेस में भेजने से पूर्व जांच कर लेना था कि कापी करते समय कुछ असम्बद्ध न हो गया हो।

20. 19 दिसम्बर 1882 को श्री स्वामी महाराज मुंशी समर्थदान को पत्र में लिखते हैं-

"... अब तुम बहुत शीघ्र नया टेप मंगाओ, नहीं तो सत्यार्थप्रकाश सब पुस्तक बिगड़ जायेंगे।"

"... 5 भूमिका और सत्यार्थप्रकाश के फारम भेजे थे, सो पहुंच गये। परन्तु सत्यार्थप्रकाश अक्षरों के घिस जाने से अच्छा नहीं छपता।"

इस पत्र से पता लगता है कि 3 मास 22 दिनों में सत्यार्थप्रकाश के प्रारम्भिक 40 पृष्ठ ही प्रकाशित हो पाये थे। भूमिका से तीसरे समुल्लास के 4 पृष्ठ तक 40 पृष्ठ होते हैं। आठ पृष्ठों का एक फारम होता था।

21. इन उपर्युक्त 40 पृष्ठों के 5 फारमों में 29वें पृष्ठ पर मुंशी समर्थदान जी ने अपनी ओर से टिप्पणी लिखकर नीचे अपना नाम छाप दिया था। इसलिए महर्षि जी ने पत्र लिखा कि-

"सत्यार्थप्रकाश आदि किसी ग्रन्थ में जो नोट लिखा तो उसमें किसी का नाम न लिखना। किन्तु टाइटल पेज के ऊपर तो तुम्हारा नाम रहना ही चाहिए। परन्तु ग्रन्थ के नोट पर न रहना चाहिए।"

महर्षि के इस आदेश को मानकर सत्यार्थप्रकाश के 82वें पृष्ठ पर तथा उससे आगे की टिप्पणियों पर मुंशी जी ने अपना नाम नहीं दिया। जहां टिप्पणी के नीचे नाम छापा गया था, उस के ऊपर कागज़ चिपका दिया गया था। वह द्वितीय संस्करण की 1884 में छपी प्रतियों में देखा जा सकता है। चतुर्थसमुल्लास की एक टिप्पाणी महर्षि जी ने स्वयं अपने हाथ से लिखी थी, उस पर किसी का नाम नहीं है।

22 इस उपर्युक्त विवेचन से यह पूर्णत: सिद्ध हो गया **कि नवलखा महल उदयपुर में पहुंचने से बहुत पहले ही महर्षि दयानन्द जी सत्यार्थप्रकाश द्वितीय संस्करण की मूलप्रति और मुद्रण प्रति तैयार करवा चुके थे।** उदयपुर निवास के समय वेदभाष्य करते हुए सत्यार्थप्रकाश के जितने पृष्ठ छापने के लिए भेजते थे, उनको शुद्ध कर लेते थे।

इतना होने पर भी मूलप्रति से प्रेसप्रति को अक्षरश: न मिला सकने के कारण बहुत प्रकार की भूलें रह गईं। वे भूलें अब परोपकारिणी सभा द्वारा ठीक कर दी गईं हैं।

इन प्रमाणों के रहते हुए भी कोई दुराग्रह करे कि महर्षि दयानन्द जी ने नवलखा महल, उदयपुर में बैठकर सत्यार्थप्रकाश का द्वितीय संस्करण लिखा था, तो वह उसका ऐतिहासिक तथ्यों के विपरीत, अनुचित दुराग्रह मात्र है। इतिहास को तोड़-मरोड़ कर दिखाना और उससे गलत परिणाम निकालकर जनता के सम्मुख प्रस्तुत करना श्रेयस्कर नहीं कहलाता। इससे ऋषि के ग्रन्थों का इतिहास बिगड़ता है। आशा है कि आर्य जनता भविष्य में इस अशुद्धि को नहीं दोहरायेगी कि सत्यार्थप्रकाश (द्वितीय संस्करण) उदयपुर के नवलखा महल में बैठकर लिखा गया था।

-गुरुकुल झज्जर (हरयाणा)

शोक समाचार

गुरुकुल झज्जर के स्नातक श्री नन्दलाल शास्त्री ग्राम छव्वा (कोसली) की पूज्या माता श्रीमती ओम्वतीजी का हृदयावरोध के कारण 23 मई 2018 को अचानक निधन हो गया। वे 69 वर्ष की थी। खेत में कार्य करके गाय का दूध निकालकर बैठी ही थी कि अचानक हृदयगति रुक गई। वे अपने पीछे सत्यपाल, नन्दलाल, नित्यानन्द तीन पुत्र एक पुत्री तथा पौत्रों से युक्त परिवार को छोड़ गई। उनके निमित्त एक जून 2018 को उनके ग्राम छव्वा में शान्ति यज्ञ किया गया।

गुरुकुल झज्जर की ओर से दिवंगत आत्मा की सद्गति तथा शोकसन्तप्त परिवार के धैर्य हेतु ईश्वर से प्रार्थना की गई।

शिविर की चित्रावली

झज्जर की उपायुक्त श्रीमती सोनल गोयल का स्वागत करते हुए श्रीमती सुनीता टीकरीकलां

उपायुक्त के सामने गुरुकुल का परिचयत कराते हुए आचार्य विजयपाल योगार्थी।

उपायुक्त श्रीमती सोनल गोयल उद्बोधन देती हुई

उपायुक्त श्रीमती सोनल गोयल शिविरार्थी को प्रमाण पत्र देती हुई।

उपायुक्त श्रीमती सोनल गोयल शिविरार्थियों के साथ

ढाल तलवार का प्रदर्शन करते हुए शिविरार्थी

मल्लखम्भ पर आसन करता हुआ शिविरार्थी

विशेष स्तूप बनाते हुए शिविरार्थी

शिविर की चित्रावली

व्यायाम प्रदर्शन करते हुए शिविरार्थी

आसनों से स्तूप बनाते हुए शिविरार्थी

शिविरार्थियों का समूह

जूड़ो का प्रदर्शन करते हुए शिविरार्थी

आर.एन.आई. द्वारा रजि. नं. 11757
पंजीकरण संख्या-P/RTK/85-3/2017-19

सुधारक लौटाने का पता :-
गुरुकुल झज्जर, जिला झज्जर (हरयाणा)-124103
E-mail : gurukuljhajjar@gmail.com

ग्राहक संख्या

श्री _____

स्थान _____

डा० _____

जिला _____

प्रकाशक आचार्य विजयपाल गुरुकुल झज्जर ने आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, दयानन्दमठ, गोहाना मार्ग, रोहतक में मुद्रक-वेदव्रत शास्त्री के प्रबन्ध से छपवाया।